ज्ञानामृत

लोग अपने कर्तव्य भूल जाते हैं लेकिन अपने अधिकार उन्हें याद रहते हैं।

इंदिरा गांधी

राष्ट्र को समर्पित

विजय मत

मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र

www.vijaymat.com | शहडोल, शुक्रवार, 11 जुलाई 2025 | वर्ष- 08 | अंक- 197 | पेज- 08 | मूल्य- ₹5.00/-

न्यूज इन शॉर्ट

ऑनलाइन सट्टेबाजी मामल में 29 अभिनेताओं-यूट्यूबर्स पर केस

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कुछ ऑनलाइन सट्टेबाजी प्लेटफॉर्मों के खिलाफ धन शोधन जांच के तहत बड़ी कार्रवाई की है। तेलंगाना में विजय देवरकोंडा, राणा दग्गुबाती और प्रकाश राज जैसे अभिनेताओं के अलावा कुछ सोशल मीडिया इनफ्लूएंसर्स व यूट्यूबर्स सहित दो दर्जन से अधिक लोगों भूमिका की पड़ताल के लिए धन शोधन का मामला दर्ज किया गया है। सूत्रों ने बताया कि इन दुकानों पर अवैध सट्टेबाजी और जुए के जरिए करोड़ों रुपये की "अवैध" धनराशि अर्जित करने का आरोप है। उन्होंने बताया कि संघीय जांच एजेंसी ने धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत मामला दर्ज करने के लिए पांच राज्य पुलिस प्राथमिकियों का संज्ञान लिया है।

शेयरों को बेचकर ₹25000 करोड़ जुटाने की तैयारी में एसबीआई

नई दिल्ली, एजेंसी। संपत्ति के लिहाज से देश का सबसे बड़ा ऋणदाता, भारतीय स्टेट बैंक, अगले हफ्ते संस्थागत क्यूआईपी के जरिए निवेशकों को 25,000 करोड़ रुपये (2.9 अरब डॉलर) के शेयर बेचने की तैयारी कर रहा है। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों के अनुसार यह देश का अपनी तरह का सबसे बड़ा सौदा हो सकता है। ब्लूमबर्ग की ओर से इकट्ठा किए गए आंकड़ों के अनुसार, अगर योग्य संस्थागत प्लेसमेंट (क्यूआईपी) पूरी तरह से सब्सक्राइब हो जाता है, तो यह भारत में अब तक का सबसे बड़ा क्यूआईपी होगा। यह 2015 में कोल इंडिया लिमिटेड की ओर से की गई 225.6 अरब रुपये की बिक्री से भी आगे निकल जाएगा। बैंक के बोर्ड ने मई में इस बिक्री को मंजूरी दी थी। सूत्रों के अनुसार, योजनाएं अभी अंतिम रूप नहीं ले पाई हैं।

बीएनपी के हथियारबंद गुंडे बांग्लादेश में हिंदुओं, मंदिरों पर हमले कर रहे

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की पूर्व पीएम शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग ने बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) पर हिंदुओं पर हमले का गंभीर आरोप लगाया। अवामी लीग ने कहा कि बीएनपी के कार्यकर्ता हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले कर रहे हैं और उन्हें डरा धमकार देश छोड़ने के लिए मजबूर कर रहे हैं। अवामी लीग ने बीएनपी के एक नेता का बाकायदा नाम लेकर ये आरोप लगाए। अवामी लीग ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में लिखा कि 'बीएनपी नेता शहीदुल इस्लाम और उसके हथियारबंद गुंडों ने बिजॉय चंद्र रॉय के घर पर हमला किया। बिजॉय चंद्र रॉय बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठा रहे थे।' शेख हसीना की पार्टी ने कहा कि हमलावरों ने मानसा मंदिर को तबाह कर दिया और दो पवित्र मूर्तियों को भी तोड़ दिया।

सोना 250 रुपये उछलकर 98670 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसी। निवेशकों और स्टॉकिस्टों की मजबूत खरीदारी ने सोने की मांग को बढ़ा दिया। गुरुवार को राजधानी दिल्ली में सोने का भाव 250 रुपये बढ़कर 98,670 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना 200 रुपये बढ़कर 98,200 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। वहीं चांदी की कीमतें 1,04,000 रुपये प्रति किग्रा पर स्थिर रहीं। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने इसकी पुष्टी की है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक ने कहा कि सुरक्षित निवेश वाली परिसंपत्तियों की दोबारा मांग के कारण गुरुवार को सोने की कीमतों में तेजी दर्ज की गई। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की व्यापार नीतियों और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर उनके संभावित प्रभाव को लेकर जारी अनिश्चितताओं ने सोने की कीमतों को समर्थन दिया है।

बिहार मतदाता सूची संसोधन पर सुप्रीम आदेश, कोर्ट ने ईसी से कहा-

आधार, राशन और वोटर कार्ड शामिल करने पर करे विचार

नई दिल्ली, एजेंसी

बिहार में मतदाता सूची विशेष पुनरीक्षण अभियान के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। लंबी बहस के बाद सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को निर्देश दिए कि वह पुनरीक्षण के लिए जरूरी दस्तावेजों में आधार कार्ड, राशन कार्ड और वोटर कार्ड को शामिल करने पर विचार करे। साथ ही तीन मुद्दों पर जवाब दाखिल करे। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को नोटिस जारी करते हुए सुनवाई की अगली तारीख 28 जुलाई तय की है। सुप्रीम कोर्ट ने मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण पर रोक नहीं लगाई है, क्योंकि याचिकाकर्ताओं ने अंतरिम रोक की मांग नहीं की है। जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जॉयमाला बागची की पीठ ने कहा कि हम सांविधानिक संस्था को वह करने से नहीं रोक सकते जो उसे करना चाहिए। कोर्ट ने चुनाव आयोग को अपना हलफनामा दायर करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया है। वहीं याचिकाकर्ताओं को उसके एक सप्ताह बाद जवाब दाखिल करने के लिए कहा है।

कोर्ट में बोला आयोग- मतदाताओं के बिना चुनाव आयोग का अस्तित्व नहीं

चुनाव आयोग के वकील ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि चुनाव आयोग एक सांविधानिक संस्था है जिसका मतदाताओं से सीधा संबंध है और अगर मतदाता ही नहीं होंगे तो हमारा अस्तित्व ही नहीं है। आयोग किसी को भी मतदाता सूची से बाहर करने का न तो इरादा रखता है और न ही कर सकता है, जब तक कि आयोग को क़ानून के प्रावधानों द्वारा ऐसा करने के लिए बाध्य न किया जाए। हम धर्म, जाति आदि के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकते।

आधार नागरिकता का प्रमाण नहीं: आयोग

मतदाता सत्यापन के लिए जरूरी दस्तावेजों से आधार कार्ड को बाहर रखने पर चुनाव आयोग ने कहा कि आधार कार्ड नागरिकता का प्रमाण नहीं है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग से पूछा कि आप मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण में नागरिकता के मुद्दे को क्यों उठा रहे हैं? यह गृह मंत्रालय का अधिकार क्षेत्र है।

सुप्रीम कोर्ट ने तीन मुद्दों पर मांगा जवाब

सर्वोच्च न्यायालय ने चुनाव आयोग से तीन मुद्दों पर जवाब मांगा है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग के वकील से कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि अदालत के समक्ष जो मुद्दा है वह लोकतंत्र की जड़ और मतदान के अधिकार से जुड़ा है। याचिकाकर्ता न केवल चुनाव आयोग के मतदान कराने के अधिकार को चुनौती दे रहे हैं, बल्कि इसकी प्रक्रिया और समय को भी चुनौती दे रहे हैं। इन तीन मुद्दों पर जवाब देने की जरूरत है।

पुनरीक्षण को बिहार चुनाव से क्यों जोड़ रहे

इससे पहले सुनवाई के दौरान जस्टिस जॉयमाल्या बागची ने चुनाव आयोग के वकील से कहा कि आप इस प्रि या को नवंबर में होने वाले चुनाव से क्यों जोड़ रहे हैं? यह एक ऐसी प्रि या है जो पूरे देश के चुनाव से स्वतंत्र हो सकती है। इस पर चुनाव आयोग के वकील ने कहा कि प्रि या का पालन किया जाएगा। उन्होंने आश्वासन दिया कि सुनवाई का अवसर दिए बिना किसी को भी मतदाता सूची से बाहर नहीं किया जाएगा।

सीएम ने गुरु पूर्णिमा महोत्सव में गुरुजनों का किया सम्मान

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के केंद्र बनकर उभरे सांदीपनि विद्यालय: मुख्यमंत्री मोहन

विजय मत, भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुणवत्तापूर्ण और रोजगार परक शिक्षा ही किसी देश की मजबूती का आधार है। बेहतर शिक्षा के बूते ही भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र बनकर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। हमारी वसुधैव कुटुबंकम की भावना से ऋषि-मुनियों के काल में भारतीय ज्ञान से दुनिया के कई देश प्रकाशमान हुए थे। वर्तमान समय में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत का स्वर्णिम काल चल रहा है। मध्यप्रदेश सरकार बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए उन्हें उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा और सभी सुविधाएं प्रदान करने के लिए संकल्पित है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के सभी शिक्षकों एवं छात्रों को गुरु पूर्णिमा महोत्सव की शुभकामानाएं देते हुए कहा कि प्रदेश में 369 सांदीपनि विद्यालय संचालित हो रहे हैं। जहां शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, स्कूल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के केंद्र बनकर उभरे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम के लिए महू, देवास, नरसिंहपुर के विद्यालयों को बेहतर शैक्षणिक प्रबंधन विकास के लिए 5-5 लाख रुपए देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को कुलगुरु की संज्ञा दी गई है, क्योंकि गुरु ही हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं।

मप्र हाई कोर्ट का मप्र शिक्षा विभाग से सवाल

शिक्षक भर्ती प्रक्रिया एनसीटीई के नियमानुसार क्यों नहीं की गई?

विजय मत, जबलपुर

मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में शिक्षा विभाग द्वारा पूर्व में दिए आदेश का पालन नहीं करने पर नाराजगी जताई है। जस्टिस डीडी बंसल की एकलपीठ ने सरकार द्वारा हाई स्कूल शिक्षक भर्ती से जुड़े नियमों में बदलाव व आदेश के बावजूद नियुक्ति नहीं दिये जाने को जमकर आड़े हाथों लिया। एकलपीठ ने इस मामले में स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. संजय गोयल और लोक शिक्षण आयुक्त शिल्पा गुप्ता को नोटिस जारी कर जवाब पेश करने के निर्देश दिये हैं। दरअसल, अवमानना का ये मामला हरदा निवासी शिवानी शाह व अन्य की ओर से दायर किया गया है। इस ममले में वरिष्ठ अधिवक्ता रामेश्वर सिंह ठाकुर ने पक्ष रखा। उन्होंने बताया कि हाई कोर्ट ने 17 मार्च 2025 को हाई स्कूल शिक्षक भर्ती के लिए योग्यता के नियम को भेदभावपूर्ण बताते हुए असंवैधानिक घोषित कर दिया था।

'ग्रामीण डाक सेवक सम्मेलन' में बोले केंद्रीय मंत्री सिंधिया

हमारा लक्ष्य ग्लोबल लीडर बनना, भारत पोस्ट के पास दुनिया बदलने की ताकत

बंगलूरू, एजेंसी

केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने भारत पोस्ट की ताकत और उसके भविष्य को लेकर एक बड़ी बात कही है। बेंगलुरु में आयोजित 'ग्रामीण डाक सेवक सम्मेलन' में उन्होंने कहा कि भारत पोस्ट जैसा कोई दूसरा वितरण नेटवर्क पूरी दुनिया में नहीं है।

उन्होंने डाक विभाग के कर्मचारियों से अपील की कि वे भारत पोस्ट को विश्व की सबसे बड़ी लॉजिस्टिक्स संस्था बनाने की दिशा में काम करें। सिंधिया ने कहा कि आज भारत पोस्ट के पास पूरे देश में 1.64 लाख से ज्यादा सेवा केंद्र हैं, जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और भरूच से लेकर तवांग तक फैले हुए हैं।

उन्होंने कहा कि इतनी गहरी और व्यापक पहुंच किसी और संस्था के पास नहीं है। यह नेटवर्क देश के हर कोने तक लोगों और सेवाओं को जोड़ता है, जो भारत की सबसे बड़ी ताकतों में से एक है। उन्होंने बताया कि डाकघर अब आधुनिक हो रहे हैं। हाथ में पकड़े जाने वाले डिजिटल उपकरण और 'दर्पण' जैसी तकनीकें डाक विभाग में आ चुकी हैं।

कांग्रेस सांसद थरूर ने ही कांग्रेस को घेरा-कहा

आपातकाल के समय अनुशासन और व्यवस्था के नाम पर की गई क्रूरता

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी

कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने एक बार फिर अपनी ही पार्टी के खिलाफ खड़े हुए हैं। इस बार उन्होंने कांग्रेस को आपातकाल को लेकर घेरा है। उन्होंने कहा कि आपातकाल में अनुशासन और व्यवस्था के नाम पर क्रूरता की गई। आपातकाल को भारत के इतिहास का महज काला अध्याय नहीं मानना चाहिए, बल्कि इसके सबक को पूरी तरह से समझना जरूरी है। उन्होंने आपातकाल में इंदिरा गांधी और संजय गांधी के कामों को लेकर सवाल उठाए। एक मलयालम अखबार में प्रकाशित लेख में कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने 25 जून 1975 और 21 मार्च 1977 के बीच प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा घोषित आपातकाल के काले युग को याद किया। उन्होंने कहा कि अनुशासन और व्यवस्था के लिए किए गए प्रयास क्रूरता में बदल दिए गए।

सीएम मोहन आज करेंगे मप्र ग्रोथ कॉन्क्लेव 2025-सिटीज ऑफ टुमॉरो का शुभारंभ

शहरी विकास के ब्लूप्रिंट और भविष्य की योजनाओं पर केंद्रित होगा कॉन्क्लेव

विजय मत, भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 11 जुलाई को इंदौर स्थित ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित 'मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव 2025-सिटीज ऑफ टुमॉरो' का शुभारंभ करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कॉन्क्लेव में होटल, पर्यटन, रियल एस्टेट और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों के प्रमुख निवेशकों से संवाद करेंगे। यह आयोजन प्रदेश में शहरी विकास के ब्लूप्रिंट और भविष्य की योजनाओं पर केंद्रित रहेगा। इस उच्च स्तरीय आयोजन में देश के 1500 से अधिक निवेशकों, उद्योगपतियों, कॉर्पोरेट प्रतिनिधियों की सहभागिता होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दोपहर 1.30 बजे कॉन्क्लेव स्थल पर पहुँचकर एक्जीबिशन का अवलोकन करेंगे, उसके बाद विशिष्ट अतिथियों के साथ बैठक करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दोपहर 3 बजे दीप प्रज्ज्वलन के साथ कॉन्क्लेव का शुभारंभ करेंगे। कॉन्क्लेव में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और नगरीय प्रशासन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। आयोजन में क्रेडाई, नगर निगम, आईडीए, स्मार्ट सिटी, हाउसिंग बोर्ड, मैट्रो, हुडको, एलआईसी सहित कई संस्थाओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। कॉन्क्लेव में चार तकनीकी-सत्र आयोजित होंगे, जिनमें शहरी उत्कृष्टता के लिए आधिनिक तकनीक, विकास के केंद्र के रूप में शहर, भविष्य के लिए सतत हरित शहरीकरण और भविष्य के शहरों की यातायात व्यववस्था जैसे विषयों पर विशेषज्ञ सहभागिता करेंगे।

शेयर बाजार में गिरावट

सेंसेक्स 345 अंक टूटा निफ्टी 25400 के नीचे

मुंबई, एजेंसी। आईटी और दूरसंचार शेयरों में कमजोरी के कारण गुरुवार को भारतीय बाजारों में बिकवाली का दौर रहा। हफ्ते के चौथे कारोबारी दिन यानी गुरुवार को भारतीय बाजार गिरावट के साथ बंद हुआ। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 345.80 अंक या 0.41 प्रतिशत गिरकर 83,190.28 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 401.11 अंक या 0.48 प्रतिशत गिरकर 83,134.97 अंक पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 120.85 अंक या 0.47 प्रतिशत गिरकर 25,355.25 पर बंद हुआ।

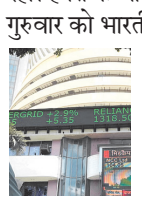

कोर्ट ने मां को सुनाई फांसी की सजा

जो महिला बच्चों की हत्या कर सकती है, उसे दुनिया जीने का अधिकार नहीं

औरैया, एजेंसी

उत्तर प्रदेश के औरैया जिले में 3 बच्चों को नदी में डुबोकर मारने वाली मां को फांसी की सजा कोर्ट ने सुनाई है। जिला कोर्ट ने उसके प्रेमी को भी उम्रकैद की सजा सुनाई है। दोनों पर 1-1 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। यह फैसला एडीजे-3 जस्टिस सैफ अहमद की अदालत ने सुनाया है। कोर्ट ने इस अपराध को दुर्लभ से दुर्लभतम की श्रेणी में माना। वहीं, कोर्ट ने कहा- जो महिला अपने बच्चों को मार सकती है, उसे समाज में जीने का अधिकार ही नहीं है। फफूंद थाना क्षेत्र के ग्राम बरौआ निवासी प्रियंका (30 वर्ष) की शादी 10 साल पहले इटावा के बसरेहर थाना क्षेत्र के गांव लुहिया निवासी अवनीश से हुई थी। दोनों के चार बेटे थे। शादी के बाद अवनीश की करंट लगने से मौत हो गई। इसके बाद प्रियंका डेढ़ साल तक ससुराल में रही और फिर 6 महीने पहले मायके बरौआ लौट आई। मायके में कलह के बाद वह अपने बच्चों के साथ औरैया शहर आ गई, जहां उसका चचेरा देवर आशीष भी उसके साथ रहने लगा। प्रियंका और आशीष के बीच झगड़े के बाद, प्रियंका ने बच्चों को ननिहाल ले जाने का बहाना बनाया और उन्हें ऑटो से देवरपुर ले गई।

एटीएस ने किया बड़ी साजिश का खुलासा

छांगुर निकला धर्मांतरण गैंग का मास्टरमाइंड 1500 से ज्यादा महिलाओं का किया ब्रेनवॉश

बलरामपुर, एजेंसी

उत्तर प्रदेश के बलरामपुर से गिरफ्तार किए गए छांगुर बाबा की असली तस्वीर अब सामने आ रही है। जो बाबा खुद को चमत्कारी बताता था, वह अब धर्मांतरण के एक बड़े नेटवर्क का मास्टरमाइंड निकला है। एटीएस (एंटी टेररिज्म स्क्वाड) की जांच में कई चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। सूत्रों के मुताबिक, छांगुर बाबा ने करीब 1,500 महिलाओं और लड़कियों का जबरन धर्मांतरण कराया है। ये महिलाएं आमतौर पर निसंतान, विधवा, परित्यक्ता या मानसिक रूप से कमजोर थीं। बाबा उन्हें पहले आश्रय और इलाज का झांसा देता था, फिर धीरे-धीरे उनका ब्रेनवॉश करता था। आखिरकार, उन्हें इस्लाम धर्म अपनाने को मजबूर करता था।

संगठित गिरोह और विदेशी फंडिंग

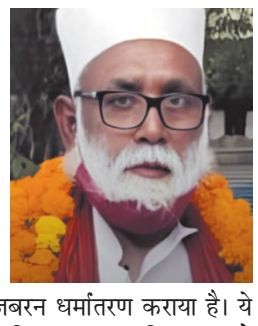

छांगुर बाबा सिर्फ अकेला नहीं था, उसके साथ नीतू रोहरा उर्फ नसरीन भी शामिल थी, जिसे एटीएस ने बाबा के साथ गिरफ्तार किया है। दोनों को 7 दिन की रिमांड पर एटीएस को सौंपा गया है। जांच एजेंसियां इस पूरे नेटवर्क के अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन की परतें खोलने में लगी हैं। बताया जा रहा है कि छांगुर भारत-नेपाल सीमा पर दावा केंद्र (धर्म परिवर्तन केंद्र) खोलने की तैयारी में था। दुबई से विदेशी फंडिंग भी आनी शुरू हो गई थी। दो साल पहले उसके रिश्तेदारों के खिलाफ भी धर्मांतरण के केस दर्ज किए जा चुके हैं।

विजय मत एंकर मध्य प्रदेश में गरीबों के राशन में सेंध लगाने वाले राशन दुकानदारों पर एआई की होगी पैनी नजर

मप्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चलाएगा पीडीएस की राशन दुकान

विजय मत, भोपाल

मध्य प्रदेश में गरीबों को बांटे जाने वाले अनाज के एक-एक दाने का हिसाब रखने के लिए विभाग ने एक नया प्लान तैयार किया है। इससे जहां अनाज वितरण में गड़बड़ी रुकेगी, वहीं विभाग के पास यह रिकॉर्ड भी तैयार होगा कि दुकानों से कितना अनाज सही तरीके से बांटा गया। इसके लिए विभाग अब प्रदेश की सभी राशन दुकानों की तुलाई मशीनों को ई-पॉश मशीनों से जोड़ रहा है। इससे उपभोक्ता को कितना राशन दिया गया, इसकी जानकारी विभाग तक सीधे पहुंचेगी। वहीं उंगलियां और अंगूठा स्कैन न होने से राशन न मिलने की समस्या को दूर करने के लिए भी विभाग ने नया रास्ता निकाल लिया है। अब ऐसे उपभोक्ताओं को बिना राशन के नहीं लौटना होगा।

एआई की मदद से पकड़ी जाएगी चोरी

तुलाई मशीन से पॉश मशीनों को जोड़े जाने के बाद प्रदेश भर से इसका डाटा विभाग के पास पहुंचेगा। इस डाटा के साथ सर्वर पर खाद्यान का बाकी डाटा भी अपलोड होगा। एआई की मदद से इस डाटा का एनालिसिस होगा और जहां भी निर्धारित मात्रा से कम अनाज दिया जाएगा तो इससे जुड़ी एनफॉरमेशन अपने आप जनरेट होगी।

फिंगरप्रिंट मिसमैच तो चेहरे से होगी पहचान... आमतौर पर यह शिकायत होती है कि उपभोक्ता के फिंगर प्रिंट पॉश मशीनों में रीड नहीं हो रहे या हाथों की लकीरें मिट चुकी हैं। कमिश्नर कर्मवीर शर्मा कहते हैं कि "इस तरह की शिकायतों को देखते हुए अब इसका भी रास्ता निकाला गया है। ऐसी स्थिति में आंखों की पुतलियों और फेस रिकग्निशन से भी पहचान स्थापित कर राशन दिया जाएगा। इसके लिए व्यवस्था की जा रही है।"

गोडाउन से लेकर गाड़ियों तक की मॉनिटरिंग... गोडाउन से लेकर पीडीएस की दुकानों तक पहुंचने के दौरान अनाज में किसी तरह की गड़बडी को रोकने के लिए अब परिवहन कार्य में लगे सभी 900 माल वाहक वाहनों को जीपीएस से जोड़ा गया है, जिससे अनाज लेकर निकलने वाले वाहनों की लगातार ऑनलाइन मॉनिटरिंग आसान हुई है। वहीं प्रदेश के सभी 250 वेयर हाउस पर भी अब सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं।

ई-पॉश मशीन से जुड़ेंगे तराजू

खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग के कमिश्नर कर्मवीर शर्मा मानते हैं कि "वास्तविकता में उपभोक्ता को कितना अनाज बांटा गया, इसकी विभाग के पास जानकारी ही नहीं आती, लेकिन अब इसका भी रास्ता निकाल लिया गया है। प्रदेश की सभी पीडीएस दुकानों के तराजू को ई-पॉश मशीन से जोड़ा जा रहा है। इससे तुलाई मशीन से जैसे ही उपभोक्ता को अनाज तौलकर दिया जाएगा, उसकी जानकारी विभाग के सर्वर पर अपने-आप पहुंच जाएगी। अनाज तौलने से पहले ई पॉश मशीन में उपभोक्ता के फिंगर प्रिंट से उसकी पहचान की जाती है, इसलिए अनाज की जानकारी के साथ यह भी पता होगा कि किस उपभोक्ता को कितना अनाज दिया गया।"

कार्यालयः भोपाल ■ शहडोल ■ इंदौर ■ जबलपुर ■ होशंगाबाद ■ विदिशा ■ सीहोर ■ बैतूल ■ छिंदवाड़ा ■ ग्वालियर ■ ब्यौहारी ■ अनूपपुर ■ उमरिया ■ सीधी ■ सिंगरौली ■ रीवा ■ सतना ■ बालाघाट ■ सिवनी ■ कटनी ■ सागर ■ मुलताई ■ मुरैना ■ टीकमगढ़ ■ रायपुर ■ बिलासपुर ■ भिलाई

न्यूज इन शॉर्ट

मवेशी चराने गए वृद्ध का शव पानी में उतराता मिला

अनूपपुर। बिजुरी थाना क्षेत्र के डोंगरिया खुर्द गांव में बुधवार को मवेशी चराने जंगल की ओर गए 70 वर्षीय रामचरण केवट पिता स्व. घमासान केवट निवासी डोंगरियाखुर्द का शव पास के तालाब में उतरता मिला। जहां परिजनों ने घटना की सूचना पुलिस को दी, पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव का पंचनामा तैयार कर पीएम उपरांत परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस मर्ग कायम कर मामले की जांच कर रही है। थाना प्रभारी विकास सिंह ने बताया कि सूचनाकर्ता मृतक का पुत्र शीतल प्रसाद केवट ने थाना पहुंचकर सूचना दी कि मेरे पिता रामचरण केवट 9 जुलाई की सुबह 11 बजे मवेशी लेकर चराने जंगल की ओर गए थे। शाम करीब 5.30 बजे मवेशी घर वापस लौट आए, लेकिन पिता वापस नहीं लौटे। शंका होने पर पल्लू के ऋेशर की ओर जाने पर देखा कि पास के तालाब में उनका शव उतर रहा था। पास ही कपड़े, जूता और छाता रखे हुए थे। संभवत- पानी में डूबने से उनकी मौत हो गई होगी। फिलहाल पुलिस मर्ग कायम मामले की जांच कर रही है।

छत पर बिजली का तार जोड़ते लगा करंट, 25 वर्षीय युवक की मौत

अनूपपुर। कोतवाली थाना अंतर्गत ग्राम पंचायत दुलहरा में गुरुवार की सुबह बिजली की करंट की चपेट में आने से 25 वर्षीय युवक पंकज पटेल पिता दीनबंधु पटेल की मौत हो गई। आनन फानन में बहेशी की हालत में उपचार के लिए परिजन जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। अस्पताल की सूचना पर पुलिस ने पंचनामा तैयार कर पीएम उपरांत शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस मर्ग कायम कर मामले की विवेचना कर रही है। बताया जाता है कि पंकज सुबह 8 बजे करीब घर की छत से उपर गुजर रहे बिजली के तार को जोडऩे का प्रयास कर रहा था। इसी दौरान उसे तेज करंट लग गया और वह वहीं बहोश हो गया। परिजनों ने तत्काल युवक को जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही रास्ते में पंकज की सांसे उखड़ गई। घटना के बाद गांव में मातम का माहौल है। ग्रामीणों ने बिजली विभाग की लापरवाही बताते हुए सुरक्षा इंतजामों की मांग की है।

गुरु पूर्णिमा पर विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में कार्यक्रमों का आयोजन

अनूपपुर। गुरु पूर्णिमा 10 जुलाई के अवसर पर जिले के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में मां सरस्वती वंदना, गुरुजनों एवं शिक्षकों का सम्मान तथा शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा गुरु संस्मरण पर संभाषण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम के दौरान भोपाल में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में आयोजित गुरु पूर्णिमा महोत्सव कार्यक्रम को लाइव प्रसारण के माध्यम से देखा एवं सुना गया। कार्यक्रम में अनेक गतिविधियां आयोजित की गई। इस अवसर पर प्राचार्य, शिक्षक, सेवानिवृत शिक्षक, पूर्व विद्यार्थी एवं आमजन उपस्थित रहे।

24 घंटे में जिले में 3.6 मिली मीटर औसत वर्षा दर्ज

अनूपपुर। अधीक्षक भू-अभिलेख अनूपपुर के अनुसार जिले में बीते 24 घंटे में 3.6 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। इस दौरान वर्षामापी केन्द्र अनूपपुर में 2.4 मिमी, जैतहरी में 3 मिमी, वेंकटनगर में 1 मिमी, पुष्पराजगढ़ में 12.4 मिमी, अमरकंटक में 1 मिमी तथा बेनीबारी में 8.6 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई।

कोयला भंडारण की साईकृपा ने नहीं ली नपा से अनुमति

आवासीय इलाके के बीच निजी साइडिंग से कोयला के खरीद-फरोख्त का काम, एनओसी और जमीन मामले में अधिकारी दे रहे गोलमोल जवाब

विजय मत, अनूपपुर ।

बिजुरी स्थित रेलवे साइडिंग पर उतरने वाले करोड़ो के कोयला का भंडारण के खेल में साईकृपा कोल साइडिंग के संचालक ने नगरपालिका बिजुरी से भी क्षेत्र में कोयला भंडारण और क्रय विक्रय के लिए अनुमति नहीं ली है। इससे पूर्व कोयला भंडारण को लेकर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड शहडोल संभाग ने सीटीओ पर पल्ला झाड़ते हुए खनिज विभाग अनूपपुर के पाले में गेंद डाल दिया था। वहीं खनिज विभाग अनूपपुर ने भी कोयला भंडारण को लेकर संचालक को कोई भी अनुमति पत्र विभाग द्वारा जारी नहीं किए जाने की बात कही थी। साथ ही प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड शहडोल की गैर जिम्मेदाराना बयान पर आश्चर्य व्यक्त किया था। लेकिन यहां सबसे आश्चर्य की बात यह है कि यहां यहां भंडारित होने वाला कोयला को किन नियमों के आधार पर भंडारित और परिवहन किया जा रहा है? जबकि यह साइडिंग न तो बेनिफिकेश है और ना ही डंपिंग एरिया। तो फिर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड शहडोल, खनिज विभाग अनूपपुर, नगरपालिका बिजुरी के जिम्मेदारों के बावजूद यहां भंडारित होने वाला कोयला को किन नियमों के आधार पर भंडारित और परिवहन किया जा रहा है? क्या रेलवे द्वारा दी गई जमीन और एसइसीएल के

www.vijaymat.com
भोपाल, बुधवार 02 जुलाई 2025
अनूपपुर 6
न बेनिफिशिएशन और ना ही डंपिंग एरिया, कम कीमत में उंची कीमत पर विक्रय का खेल
साईकृपा को नहीं भंडारण की अनुमति, किन नियमों पर हो रहा कोयले का स्टॉक
www.vijaymat.com
सतना, रविवार, 29 जून 2025
अनूपपुर 5
कोयले की सुरक्षित भंडारण नहीं उंची दीवाल, और ना ही पानी का हो रहा छिड़काव
बिजुरी कोल साइडिंग से उड़ता डस्ट कॉलोनीवासियों को बना रहा बीमार

कोयले की आपूर्ति कराने से ही नगरीय प्रशासन का राजस्व टैक्स स्वत- माफ हो जाता है। या फिर यहां नगरीय राजस्व वसूली के अलग प्रावधान है और अगर है तो उसका पालन क्यों नही किया जा रहा है। फिलहाल आवासीय क्षेत्र के बीच नगरीय जमीन का उपयोग कर रेलवे की साइडिंग पर कोयला का भंडारण अवैधानिक तरीक से किया जा रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यहां रसूखदारों के अवैध कामों के लिए एनओसी के साथ किसी टैक्स पे की आवश्यकता नहीं पड़ती। भले ही इस काम में नगरीय क्षेत्र को मिलने वाला राजस्व टैक्स की ही क्यों नहीं हानि उठाना पड़े।

नियमों को दरकिनार कर हो रहा अवैध कोयला का भंडारण

साई कृपा कोल साइडिंग बिजुरी पर उतरने वाले करोड़ों रूपए के काले हीरे का कारोबार बिना भंडारण की अनुमति के संचालित हो रहा है। इसे अवैध कारोबार कहा जा सकता है, जहां कम कीमत पर एसईसीएल से कोयला आपूर्ति कराकर उसे छांटकर उंची कीमत में विक्रय किया जा रहा है। जबकि नियमों के अनुसार कोयला खदान से 50 किलोमीटर के भीतर कोयला भंडारण नहीं किया जा सकता है। अगर रेलवे की जमीन पर कोयले के भंडारण की अनुमति मिलती है तो सेवा शर्तों के अनुसार वह सिर्फ भंडारण कर सकता है, साइडिंग का उपयोग या संचालन नहीं कर सकता। भंडारण की अनुमति रेलवे दे तो वहां संचालक द्वारा मात्रा के अनुसार 24,48 या 72 घंटे के भीतर उसे खाली किया जाना अनिवार्य होता है। किसी कारण वश समय की अधिक आवश्यकता पड़े तो सप्ताहभर का समय भी दिया जा सकता है। लेकिन भंडारण की आड़ में अवैध कोयले का कारोबार नहीं संचालित किया जा सकता। लेकिन यहां प्रशासन ने रेलवे की साइडिंग वाली जमीन पर किस नियमों के आधार पर कोयले का भंडारण करने की अनुमति दे रही है यह समझ से परे हैं।

खनिज विभाग ने नहीं दी है अनुमति

साई कृपा कोल साइडिंग बिजुरी द्वारा भंडारण के लिए पूर्व में खनिज विभाग से अनुमति मांगी थी। लेकिन यहां रेलवे की जमीन होने के कारण खनिज विभाग ने अनुमति देने से मनाही कर दी थी। जबकि स्थानीय नगरीय क्षेत्र ने भी भंडारण के लिए कोई अनुमति नहीं दी है। वहीं प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड संभाग शहडोल के अधिकारी मुकेश श्रीवास्तव का कहना है कि यह मेरे क्षेत्राधिकार में नहीं है, इस सम्बंध में एसइसीएल और खनिज विभाग ही जानकारी दे पाएगा। लेकिन आश्चर्य (सीटीओ) वायु, जल सम्मति का प्रमाण पत्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड विभाग द्वारा ही प्रदाय किया जाता है।

बिना लाइसेंस बिक्री की शिकायत पर हुआ कृषि विभाग का निरीक्षण, सभी विक्रेताओं को दिए सख्त निर्देश

बीज व कीटनाशक विक्रेताओं के स्टॉक रजिस्टर अधूरे

विजय मत, कोतमा ।

नगर में बीज, उर्वरक एवं कीटनाशकों के विक्रेताओं द्वारा नियमों के पालन की स्थिति जानने के उद्देश्य से कृषि विभाग द्वारा निरीक्षण अभियान चलाया गया। यह निरीक्षण बीज/उर्वरक/कीटनाशक निरीक्षक एवं प्रभारी वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी के नेतृत्व में किया गया। निरीक्षण के दौरान वार्ड क्रमांक 2 स्थित गोयल ट्रेडर्स के विरुद्ध आई शिकायत की जांच की गई, जिसमें आरोप था कि प्रतिष्ठान बिना लाइसेंस के बीज व उर्वरक का विक्रय कर रहा है। निरीक्षण में यह आरोप असत्य पाया गया। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि गोयल ट्रेडर्स कृषि विभाग का लाइसेंसी विक्रेता है और वर्तमान में केवल उर्वरक विक्रय कर रहा है ।उसके गोदाम में 66 टन यूरिया उर्वरक भंडारित पाया गया, जिसकी मात्रा भौतिक सत्यापन एवं उर्वरक विक्रय मशीन दोनों में एक समान पाई गई। प्रतिष्ठान में लाइसेंस की छायाप्रति उचित रूप से चस्पा की गई थी। विक्रेताओं को निर्देशित किया गया कि वे विक्रय पूरी तरह से मशीन से करें

और स्टॉक रजिस्टर नियमित रूप से संधारित करें। इसके अतिरिक्त निरीक्षण दल ने नगर के अन्य विक्रेताओं – माँ काली बीज भंडार, गुप्ता बीज भंडार, एवं पटेल कृषि सेवा केंद्र – का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि इन प्रतिष्ठानों में कीटनाशक उपलब्ध नहीं थे। इस बारे में विक्रेताओं ने बताया कि कोतमा विकासखंड एक फसली क्षेत्र है और वर्तमान में धान की रोपाई का कार्य चल रहा है, इसलिए कीटनाशकों की मांग नगण्य है, इसी कारण स्टॉक नहीं मंगाया गया है। बीजों की शुद्धता को लेकर विभाग गंभीर है। करीब 15 दिन पूर्व विकासखंड क्षेत्र से धान की विभिन्न किस्मों एवं कंपनियों के कुल 28 नमूने एकत्र कर परीक्षण हेतु भेजे जा चुके हैं, जिनकी रिपोर्ट की प्रतीक्षा की जा रही है। निरीक्षण के दौरान एक महत्त्वपूर्ण बात यह सामने आई कि अधिकांश विक्रेताओं के यहां स्टॉक रजिस्टर अधूरे पाए गए और बिक्री के अनुसार जानकारी दर्ज नहीं थी। इस पर अधिकारियों ने सख्ती बरतते हुए चेतावनी दी कि आगामी निरीक्षण में स्टॉक रजिस्टर यदि पूर्ण एवं सही नहीं पाया गया तो संबंधित विक्रेताओं के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी एवं अर्थदंड भी लगाया जाएगा। साथ ही सभी विक्रेताओं को यह निर्देशित किया गया कि वे किसानों को पक्की रसीद (देयक) देना अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करें, ताकि पारदर्शिता बनी रहे और किसानों के हित सुरक्षित रहें। निरीक्षण के दौरान सभी प्रतिष्ठानों के लाइसेंस वैध एवं स्पष्ट रूप से प्रदर्शित पाए गए। कृषि विभाग द्वारा यह स्पष्ट संकेत दिया गया कि कृषि आदान विक्रेताओं पर नियमित निगरानी रखी जाएगी और किसी भी प्रकार की अनियमितता या नियमों की अवहेलना को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

सड़क दुर्घटनाओं से बचाने यातायात पुलिस के साथ युवाओं ने मवेशियों के गले बांधे रेडियम बेल्ट

विजय मत, अनूपपुर ।

जिला यातायात पुलिस ने स्थानीय शिव मारूति युवा संगठन के युवाओं के साथ मिलकर मवेशियों को बारिश के दौरान सड? दुर्घटनाओं से बचाने उसके गले में रेडियम रिफ्लेक्टर बेल्ट बांधने का अभियान चलाया। जहां 50 से अधिक मवेशियों को रेडियम बेल्ट पहनाए गए। यातायात प्रभारी ज्योति दुबे ने बताया कि रेडियम बेल्ट के गले में होने से अंधेरे में भी किसी मवेशी होने की स्पष्ट दृश्यता बनी रहती है। उन्होंने बताया कि वर्षा ऋतु में जमीन नमी युक्त हो जाने के कारण अक्सर मवेशियों में रोड पर बैठने की प्रवृत्ति पाई जाती है। रात्रि के समय अंधेरा होने से रोड पर बैठे मवेशी स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते, जिससे वाहन टकराने से उनके दुर्घटना ग्रस्त होने के साथ अप्रिय घटनाएं होने की संभावनाएं अधिक रहती है। जिसे देखते हुए पुलिस अधीक्षक के निर्देश में अनूपपुर जिले में सड? दुर्घटना में मवेशियों की मृत्यु ना हो इस दिशा में रोड पर बैठी गाय को हटाया जाए, रात्रि के समय मवेशी स्पष्ट रूप से दिखाई दें इसके लिए रेडियम रिफ्लेक्टर बेल्ट बांधे जाएं। वहीं इस अभियान में शहर की सड?ों पर बैठे लगभग 50 मवेशियों को रेडियम रिफ्लेक्टर बेल्ट पहनाए गए हैं। इसके पूर्व 70 मवेशियों को रेडियम रिफ्लेक्टर बेल्ट पहनाए गए थे, इस प्रकार 120 से अधिक मवेशी को बेल्ट पहनाए जा चुके हैं।

कोतमा में आयोजित बीएलओ प्रशिक्षण का अपर कलेक्टर ने किया निरीक्षण

अनूपपुर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश में मतदाता सूची के सुधार एवं बूथ लेवर ऑफिसर्स की शंकाओं का समाधान करने के उद्देश्य से जिले में सभी बीएलओ के प्रशिक्षण आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में 86-कोतमा विधानसभा के बूथ लेवल ऑफिसर्स(बीएलओ)का प्रशिक्षण 10 जुलाई को शासकीय मॉडल स्कूल कोतमा में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का अपर कलेक्टर दिलीप कुमार पांडेय ने निरीक्षण कर जायजा लिया और बीएलओ को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। प्रशिक्षण में 202 बीएलओ एवं 20 बीएलओ सुपरवाईजर को मास्टर ट्रेनर्स डॉ. कौशलेन्द्र सिंह, अजय सिंह चौहान, डीआर बांधव, आरके मिश्रा, विजय तिवारी, संतोष सक्सेना, यूके तिवारी, सुधीर जैन, रामजी पटेल, राजमणि पांडेय, बीके विश्वकर्मा, केके गौतम द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी बीएलओ को मतदाता सूची में नाम जोडऩा, हटाना, संशोधन करना सहित अन्य बिंदुओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके साथ ही सभी को बीएलओ के दायित्वों के बारे में भी बताया गया।

पेसा मोबिलाइजरों ने वेतन वृद्धि व भुगतान की मांग को लेकर कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

अनूपपुर। जिले की ग्राम पंचायतों में कार्यरत पेसा मोबिलाइजरों ने गुरुवार को कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में उन्होंने दीपावली के अवसर पर की गई वेतन वृद्धि की घोषणा के आदेश अब तक जारी न होने और बीते चार माह से वेतन न मिलने पर गहरी नाराजगी जताई।ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि मुख्यमंत्री ने पेसा मोबिलाइजरों के मानदेय को ?4,000 से बढ़ाकर ?8,000 प्रतिमाह करने की घोषणा की थी, लेकिन आज तक इसका प्रशासनिक आदेश जारी नहीं किया गया है। वहीं चार माह से लंबित मानदेय ने इन कर्मचारियों के समक्ष आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है।मोबिलाइजरों ने चेतावनी दी है कि यदि तीन दिवस के भीतर उनकी मांगों पर कोई सकारात्मक कार्यवाही नहीं होती, तो वे सात दिवस का सामूहिक अवकाश लेंगे और इसके पश्चात अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस स्थिति के लिए संपूर्ण जवाबदेही शासन-प्रशासन की होगी।ज्ञापन सौंपने पहुंचे पेसा मोबिलाइजरों ने सरकार से शीघ्र आदेश जारी कर लंबित वेतन का भुगतान करने और भविष्य में नियमित वेतन प्रदाय की व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की है।

फ्रिज की करंट से महिला की मौत, जांच में जुटी पुलिस

अनूपपुर। बिजुरी थानांतर्गत कोठी गांव में फ्रिज की करंट की चपेट में आने से 27 वर्षीय महिला की मौत हो गई। घटना की सूचना पर पुलिस ने मौके पर पंचनामा बनाकर पीएम उपरांत परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस मर्ग कायम कर मामले की जांच में जुटी है। बताया जाता है कि सुनील प्रजापति पिता रामपाल प्रजापति निवासी कोठी ने 9 जुलाई को थाना पहुंचकर सूचना दिया कि मेरी पत्नी मृतिका निशा प्रजापति पति सुनील प्रजापति उम्र 27 वर्ष निवासी कोठी की घर में रखें फ्रिज से सब्जी निकलते समय करंट लग गया। जहां तबियत गंभीर होने पर उपचार के लिए पीएचसी बिजुरी लाने पर चिकित्सक द्वारा मृत घोषित कर दिया है। सूचना पर मर्ग कायम किया गया। वहीं मृतिका निशा प्रजापति नवविवाहिता होने के कारण कार्यपालिक दंडाधिकारी वृत्त बिजुरी को पत्र लेख कर शव पंचायत नामा करवाई गई।

कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग, भवन / सड़क संभाग शहडोल (म.प्र.)

निविदा सूचना 05/एस0ए0सी0 निविदा/वर्ष 2025-26/ शहडोल, दिनांक 07/07/2025

निम्नलिखित कार्यों हेतु निविदायें आमंत्रित की जाती है। उल्लेखित कार्य का विस्तृत विवरण वेबसाइट mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

स.क्र.	टेण्डर क्रमांक	जिला	निविदा आमंत्रण	कार्य का नाम	ठेके की अनु, राशि (लाख में)	ई0एम0 डी0 की राशि	ई0एम0 डी0 की राशि	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1-1-	2-2025_PWDRB_435521_1	3 शहडोल	4 प्रथम	5 बुढ़ार, हरदी, कठौतिया मार्ग चैनेज 6800 पर स्लैब कलवर्ट का निर्माण कार्य।	6. 142.16	7. 142160/-	8. 125000/-	9. 04 माह वर्षाकाल छोड़कर

ऑनलाईन पोर्टल http://mptenders.gov.in के माध्यम से निविदा प्रपत्र कय करने का समय दिनांक 07.07.2025 सुबह 10.30 से अन्तिम दिनांक 18.07.2025 शाम 17.30 तक एवं निविदा डाउनलोड करने का समय दिनांक 07.07.2025 सुबह 10ः30 से अन्तिम दिनांक 18.07.2025 शाम 17.30 तक है।
टीपः- निविदाकारों का लोक निर्माण विभाग (भ/स) में पंजीयन अनिवार्य है।
निविदाकारों का पैन कार्ड आधार कार्ड से लिंक होना अनिवार्य है।
मूल शपथ पत्र निविदा खुलने की दिनांक के पूर्व कार्यालय में प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

कार्यपालन यंत्री
लोक निर्माण विभाग (म/स)
शहडोल संभाग शहडोल (म0प्र0)

G15375/25

कार्यालय कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड-उमरिया (म.प्र.)

निविदा क्र. 19-20/2025-26/का.यं./ लोक.स्वा.यों/खण्ड/उमरिया दिनांक 02/07/2025

निविदा आमंत्रण सूचना (संक्षिप्त)

निम्नलिखित कार्य की निविदा प्रक्रिया ई-टेण्डरिंग पद्धति से पोर्टल http://www.mptenders.gov.in पर आमंत्रित हैं।

कार्य:- उमरिया जिला के विकासखण्ड पाली के विभिन्न ग्रामों में जल जीवन मिशन अंतर्गत पुनिरीक्षित योजनाओं एवं योजनाओं के शेष कार्य के अंतर्गत आर.सी.सी. उच्चस्तरीय पानी की टंकीएवं सम्पवेल का मरम्मत, पाईप लाईन विस्तार, वॉल चेम्बर निर्माण, पम्प हाऊस प्रदाय, निर्माण एवं स्थापना, विद्युत लाईन विस्तार, घर-घर नल कनेक्सन एवं 90 दिवस काः ट्रायल रन सहित समस्त सामाग्री प्रदाय एवं स्थापना संबंधी पुनिरीक्षित प्राक्कलन अनुसार समस्त कार्य।

क्र.	निविदा क्र.	ई टेण्डर नंबर	ग्राम	अनुमानित लागत (रु. लाख में)	अमानती राशि (रु. में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू.में.)	समय अवधि (वर्षाकाल सहित)	समय अवधि (वर्षाकाल सहित)
1-	19/25-26	2025_PHED434657_1	बड़वाही, सलैया 01, मलियागुड़ा	247.09 लाख	2,47,090/-	15,000/-	02 माह	
2-	20/25-26	2025_PHED434658_1	बरदढार, भिम्माडोंगरी, पहड़िया, पनवारी, गोयरा, बुढना, छिंदहाटोला, कुमुर्दु, बड़वाही, गढरौला, कुनकुनी, मढाटोला, मढी, मझगवाँ, नेऊसा, पतनारकला, पटपरिहा, टिकुरी, सरवाहीकला, बैंसवारटोला, शाहपुर	247.21	2,47,210/-	15,000/-	02 माह	लोक निर्माण विभाग मध्यप्रदेश में पंजीकृत या केन्द्र के निर्माणों में पंजीकृत संस्थाएँ

प्रीबिड मीटिंग की तिथि 03/07/2025 समय 11.00 सुबह
निविदा ऑनलाईन क्रय एवं दर प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 16/07/2025 समय 5.30 सायं
निविदा ऑनलाईन खोलने की तिथि 18/07/2025 समय 11.00 सुबह
निविदा शर्तें एवं अन्य जानकारी उपरोक्त उल्लेखित वेबसाईट पर प्रदर्शित हैं। निविदा में किसी भी प्रकार के संशोधन होने पर संशोधन समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं किया जावेगा। समस्त संशोधन केवल उपरोक्त उल्लेखित वेबसाइट पर ही उपलब्ध होगें।

G15377/25

कार्यपालन यंत्री
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग जिला उमरिया

कार्यालय प्रमुख अभियंता
जल संसाधन विभाग, भोपाल
ईमेल- ce.tender.wrdmp@gmail.com
फोन- 0755-2767635 फेक्स-0755-2552406

निविदा सूचना क्रमांक-1164/2025-26/प्रमुख अभियंता/ई-टेंडरिंग / भोपाल, दिनांक 07.07.2025

निम्न कार्यों हेतु निविदा वेबसाइट https://www.mptenders.gov.in पर आमंत्रित की गई है। निविदा प्रपत्र दिनांक 21.07.2025 को 17.30 बजे तक कय/डाउनलोड तथा प्रस्तुत किए जा सकते हैं। निविदा में संशोधन की स्थिति में वेबसाइट पर ही संशोधन देखा जा सकेगा। विस्तृत निविदा आमंत्रण सूचना व अन्य जानकारी उपरोक्त वेबसाइट पर देखी जा सकती है।

स.क्र.	निविदा क्र.	कार्य	जिला	लागत
1-	2025_WRD_435369	पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से कालीसिंध कॉम्प्लेक्स वृहद सुक्ष्म सिंचाई परियोजना को पर्यावरण मंजूरी का कार्य।	शाजापुर	43.97
2-	2025_WRD_435370	पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से लखुन्दर कॉम्प्लेक्स वृहद सुक्ष्म सिंचाई परियोजना को पर्यावरण मंजूरी का कार्य।	शाजापुर	63.15
3-	2025_WRD_435371	दतिया सिंचाई नहर की आर.डी. 10920 मी. से 10940 मी. तक एवं 10 एल-माइनर की आर.डी. 0 से 150 मी. तक सी.सी. लायनिंग, गोंदन शाखा नहर की आर.डी. 24200 मी. से 24220 मी. तक सी.सी. बाल एवं हंसापुर तालाब, उनाव तालाब में सी.सी. कार्य, रामगढ़ माइनर, सबमाइनर, धनपीपरी माइनर, तगा माइनर, 8 एल माइनर एवं सालोन वितरिका की मरम्मत, मिट्टी का कार्य।	दतिया	32.93
4-	2025_WRD_435427	बाण सागर त्योंथर उद्धवहन सिंचाई योजना हेतु स्थापित 3 नग साफ्ट स्टार्टर का मरम्मत कार्य।	शहडोल	25.81

G15396/25

मुख्य अभियंता (प्रोक्योरमेंट)

न्यूज इन शॉर्ट

गुरू पूर्णिमा के अवसर पर विधायक ब्यौहारी ने स्कूली विद्यार्थियो को वितरित की साइकिलें

शहडोल। गुरू पूर्णिमा के अवसर पर पूरे प्रदेश की तरह शहडोल जिले में भी स्कूली विद्यार्थियो को साइकिलें वितरित की गई। ब्यौहारी विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री शरद कोल ने शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ब्यौहारी के विद्यार्थियो को निःशुल्क साइकिलों का वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा विद्यार्थियो को अपने सपनो की उड़ान भरने के लिए अनेको सुविधाएं दी जा रही है। इसी श्रृखला में कक्षा 6 एवं कक्षा 9 के विद्यार्थियो को विद्यालय पहुंचने में किसी भी तरह की परेशानी न हो को दृष्टिगत रखते हुए साइकिलो का वितरण किया जा रहा हैए इससे विद्यार्थियो को अपनी शिक्षा को सुगम बनाने का अवसर मिल रहा है। आपने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के नेतृत्व में विद्यार्थियो के लिए अनेको योजनाएं संचालित की जा रही है। निःशुल्क पाठ्य पुस्तकए गणवेशए साइकिलेए 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियो को लैपटॉपए स्कूल में सबसे ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को स्कूटी उपलब्ध कराई जा रही है। आपने कहा कि बच्चे खूब प? और आगे बढ़े अपने सपनो को साकार करें। मध्यप्रदेश तथा देश का नाम दुनिया भर में रोशन करें। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व नरेंद्र सिंह धुर्वे, नगर पंचायत अध्यक्ष कृष्ण राजन गुप्ता, उपाध्यक्ष श्रीमती चंद्रकली पटेल सहित विद्यालय के प्राचार्य, बीआरसीसी, समाजसेवी, सहित विद्यार्थी उपस्थित थें।

अवैध शराब जप्त

शहडोल। जिले में अवैध शराब की बिक्री पर रोक लगाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार अभियान चलाया गया। इस अभियान के तहत जिले के सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में अवैध शराब के विक्रेताओं के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करें। अभियान के अंतर्गत दिनांक 08.07.25 को जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में छापेमारी की गई, जिसमें कुल 02 स्थानों पर दबिश दी गई। उक्त कार्रवाई में 12 लीटर अवैध कच्ची शराब जोकि बिक्री करने के प्रयोजन से आरोपियों के कब्जे से जप्त की गई, उक्त मशरूका की कुल कीमत 1,200 रु. है। सभी आरोपियों के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की गई।

9 वर्षों में 73 कि. मी शहडोल-उमरिया,सड़क नहीं बन पाई ! गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया जाए

शहडोल ।वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता कैलाश तिवारी ने शहडोल

-उमरिया सड़क 9 वर्षों में 73 किलोमीटर भी ना बन पाने को आश्चर्यजनक करार देते हुए कहा है कि यह देश के लिए आश्चर्य की बात है कि सड़क निर्माण की आधुनिक साधन होने के बावजूद 9 वर्षों में भी शहडोल -उमरिया सड़क नहीं बन पाई। कैलाश तिवारी ने कहा है कि यह रिकॉर्ड गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज करने योग्य है तथा संभाग वासियों को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए। हो सकता है कि इस कारण से यह सड़क दो-तीन वर्षों में बनकर तैयार हो जाए। इस सड़क की विशेष बात यह भी है कि जितनी सड़क बन रही है। उससे ज्यादा खराब भी हो रही है जगह-जगह उखड़ रही है।इस निर्माण के लिए जहां एक और ठेकेदार तो दोषी है ही दूसरी ओर सरकारी विभाग के निरीक्षण कर्ता इंजीनियर भी कम दोषी नहीं है ।दोनो की साठ गांठ सिद्ध करती है कि अगर लेनदेन का सा थ हो तो कहीं भी मनमानी की जा सकती है।यह इसका ज्वलंत उदाहरण है। संभाग में पदस्थ अधिकारी इस मामले को इस तरह देखते हैं कि मानो यह किसी दूसरे देश का मामला हो।

सड़को व नालों में नजूल की भूमि पर किये गये अतिक्रमण के कारण जल भराव की स्थिति बनी- सुभाष

शहडोल। जिला कॉंग्रेस कमेटी शहडोल के जिलाध्यक्ष सुभाष

गुप्ता ने कहा कि, शहडोल नगरपालिका मे ढ़ाई साल से कॉंग्रेस की परिषद है, जबकि पिछले बीस साल लगातार भारतीय जनता पार्टी की परिषद रही है।भाजपा के बीस वर्षों के कार्यकाल के दौरान नगरपालिका क्षेत्र मे लगातार सड़कों व नालों मे नजूल की जमीनों पर अतिक्रमण किए गए, जिसमे भाजपा की परिषद द्वारा कब्जाधारियों को ऑख बंद करके अपनी मौन स्वीकृत व संरक्षण प्रदान किया गया, जिसका खामियाजा नगरवासियों को जल भराव व संकीर्ण सड़कों के रूप मे भोगना पड़ रहा है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि, नगर मे जितने भी नालों मे अतिक्रमण किया गया है उनकी जांच कराई जाए, इनमे से सभी अतिक्रमण भाजपा की परिषद के समय के हैं जबकी पिछले ढ़ाई साल से कॉंग्रेस की परिषद ने अतिक्रमण पर अंकुश लगाने का कार्य किया है। जिलाध्यक्ष ने बताया कि प्रकृतिक आपदा मे मुआवजा देने का अधिकार नगरपालिका के पास नहीं होता, ये राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र मे आता है, इसके लिए कांग्रेस के वर्तमान संवेदनशील नगरपालिका अध्यक्ष घनश्याम जयसवाल ने प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय मोहन यादव जी को पत्र लिख कर भारी बारिश मे जिन नागरिकों को आर्थिक क्षति पहुंची है उनको मुआवजा दिए जाने की मांग भी की है। श्री गुप्ता ने कहा नगर मे भाजपा की सरकार द्वारा सीवर लाइन का कार्य चल रहा है।

पूर्व कलेक्टर के आदेश के बावजूद नहीं हुई कार्यवाही, जिम्मेदारों की अनदेखी से बढ़ा संकट

रहवासी क्षेत्रों में संचालित गैस गोदामों से खतरे में जनजीवन

विजयमत,शहडोल।

जिला मुख्यालय में रहवासी इलाकों के बीच संचालित गैस गोदाम आम नागरिकों के जीवन को प्रत्यक्ष खतरे में डाल रहे हैं। प्रशासनिक आदेशों और सुरक्षा मापदंडों को दरकिनार कर आज भी शहर के बीचोंबीच नर्मदा गैस एजेंसी एवं बलपुरवा स्थित गोदाम जैसे अनेक गैस स्टोरेज सेंटर धड़ल्ले से संचालित हो रहे हैं। रहवासियों और अधिकारियों के क्वार्टर्स से सटे इन स्थानों पर कभी भी बड़ा हादसा घटित हो सकता है।

पूर्व कलेक्टर के आदेशों की उड़ रही धज्जियां

जनवरी 2020 में तत्कालीन कलेक्टर द्वारा स्पष्ट आदेश जारी किए गए थे कि पाण्डवनगर बस्ती के बीच स्थित नर्मदा गैस एजेंसी को अन्यत्र शिफ्ट किया जाए, अन्यथा डीलरशिप समाप्त करने की कार्यवाही की जाएगी। इसके बावजूद वर्षों से कोई कदम नहीं उठाया गया।

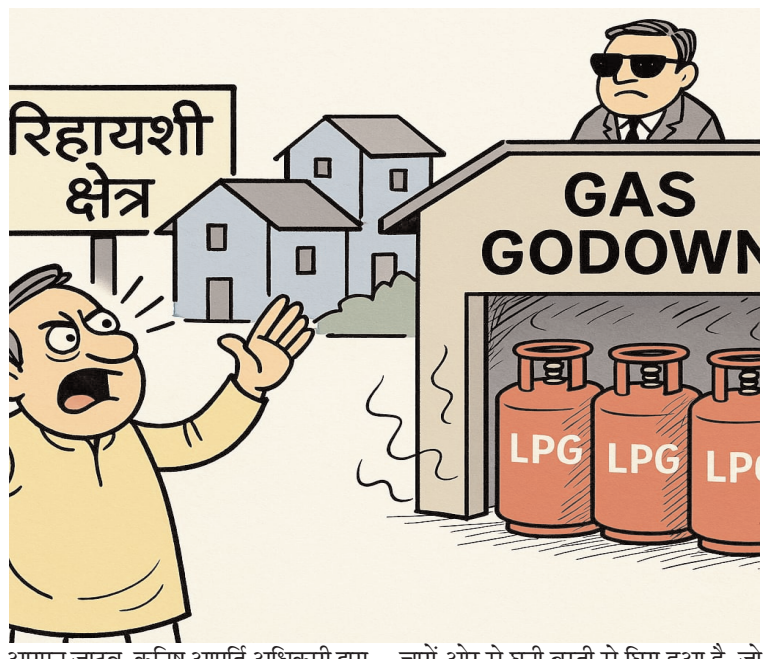

आरएन जाटव, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी द्वारा की गई जांच में यह स्पष्ट हुआ कि गैस गोदाम चारों ओर से घनी बस्ती से घिरा हुआ है, जो नियमों के प्रतिकूल है।

गैस गोदामों को लेकर बने हैं स्पष्ट नियम

सरकार द्वारा गोदाम निर्माण को लेकर कई सख्त मानदंड तय किए गए हैं, गोदाम के चारों ओर कम से कम 7 से 9 मीटर खाली जगह होनी चाहिए।,
फायर डिपार्टमेंट और केंद्रीय गृह मंत्रालय के एक्सप्लोसिव विभाग की एनओसी अनिवार्य है।, फूड एंड सप्लाई विभाग से भी अनुमति लेनी होती है।, गोदाम आबादी से कम से कम 1 किलोमीटर दूर हो।

फायर फाइटिंग सिस्टम आवश्यक है।

शहडोल की स्थिति इन मानकों का खुला उल्लंघन है, जिससे साफ है कि प्रशासन और एजेंसियां नियमों को ताक पर रखकर काम कर रही हैं।

स्थानीय रहवासियों की अनसुनी पुकार

स्थानीय नागरिकों द्वारा कई बार जिला प्रशासन को आवेदन देकर गोदामों को अन्यत्र स्थानांतरित करने की मांग की जा चुकी है। परंतु, रसूखदार संचालकों के दबाव में यह समस्या जस की तस बनी हुई है। सैकड़ों भरे सिलेंडरों की मौजूदगी के चलते कभी भी चिंगारी या अन्य कारणों से भीषण विस्फोट हो सकता है, जिससे जान-माल की भारी हानि हो सकती है।

कब जागेगा प्रशासन

शहडोल में लगभग 4 से 5 लाख उपभोक्ता प्रतिदिन 20 हजार सिलेंडर भरवाते हैं। 50 से अधिक गैस एजेंसियों में से लगभग 10 गोदाम शहरी क्षेत्र में स्थित हैं। पूर्व में भी यहां छोटे-बड़े हादसे हो चुके हैं, लेकिन उससे कोई सबक नहीं लिया गया। सवाल यह उठता है कि क्या प्रशासन किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है।

अफसरों ने एक घंटे में खा लिए 14 किलो ड्रायफ्रूट्स छह लीटर दूध की चाय में डाली पांच किलो चीनी

विजयमत,शहडोल।

शहडोल के भदवाही ग्राम में जल गंगा अभियान के कार्यक्रम में अधिकारियों ने ड्रायफ्रूट्स व चाय पर जनता के पैसे से खर्च किया। फर्जी बिलिंग में काजू समेत अन्य सामान की कीमतें बढ़ाकर दर्शाई गईं। 14 किलो ड्रायफ्रूट्स व 6 लीटर दूध की चाय पर 19,000 रुपये खर्च हुए।
मध्य प्रदेश में नित नए भ्रष्टाचार के मामले सामने आ रहे हैं। हाल ही में सामने आए ऑइल पेंट घोटाले की चर्चा रुक भी नहीं सकी अब नया मामला सामने आ गया। मामला शहडोल का है।
जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत आयोजित एक कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के आला अधिकारियों के द्वारा की गई अनियमितताओं का मामला प्रकाश में आया है। शहडोल के गोहपारू ब्लॉक के भदवाही ग्राम पंचायत में आयोजित

इस कार्यक्रम के दौरान, अधिकारियों ने मात्र एक घंटे में 14 किलो ड्रायफ्रूट्स का सेवन कर लिया, जिसका खर्च जनता के पैसों से उठाया गया। इस कार्यक्रम में कलेक्टर, जिला पंचायत सीईओ, एसडीएम और अन्य कई आला अधिकारी शामिल हुए थे। इन अधिकारियों ने 5 किलो काजू, 6 किलो बादाम और 3 किलो किसमिस खाकर एक अनोखा रिकॉर्ड बनाया।
इसके अलावा, उन्होंने 6 लीटर दूध में 5 किलो शक्कर मिलाकर चाय का भी सेवन किया। इस आयोजन का आयोजन भदवाही ग्राम पंचायत द्वारा किया गया था, जिसके लिए दी गई राशि का भुगतान विवादित बिलों के माध्यम से किया गया है।
जल गंगा संवर्धन अभियान क्या है?
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में जल गंगा संवर्धन अभियान का उद्देश्य गांवों में जल संरचनाओं की सफाई करना है। इस अभियान के तहत सरकार ने गांवों में कुएं, तालाब और नदियों की सफाई का कार्य शुरू किया है। हाल ही में मुख्यमंत्री ने इस अभियान की प्रगति की जानकारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दी थी।
भदवाही में क्या हुआ?
भदवाही ग्राम पंचायत में जल चौपाल का आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारी और ग्रामीण दोनों शामिल हुए। पता चला है कि इस आयोजन में सर्व किया गया भोजन खिचड़े, पूड़ी और सब्जी के रूप में था, जबकि अधिकारियों के नाम पर जो बिल जारी किए गए उसमें ड्रायफ्रूट्स का खर्च दिखाया गया। यह भी चर्चा है कि अधिकारियों के आगमन के लिए ग्राम पंचायत ने उचित व्यवस्था की थी, लेकिन यह सब सरकारी धन के दुरुपयोग की कहानी बयां करता है।

ब्यौहारी नपा कार्यालय की छत का प्लास्टर गिर रहा

जान जोखिम में डालकर काम कर रहे कर्मचारी

विजयमत,शहडोल।

नगर परिषद कार्यालय भवन जर्जर हालत में तब्दील हो रहा है। जनप्रतिनिधि और अधिकारी उदासीन बने बैठे है। नगर परिषद कार्यालय में बने कमरों के छत का प्लास्टर अपने आप निकल कर गिर रहा हैं।और कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डालकर विभागीय काम कर रहे हैं।
नगरपालिका परिषद कार्यालय के राजस्व शाखा की छत का प्लास्टर अपने आप निकलकर गिर रहा है। यह तो गनीमत रही कि कोई चोटिल नहीं हुआ। रखरखाव न होने से जर्जर हो रहा भवन कुछ ही दिनों में खंडहर में तब्दील हो सकता है। मुख्य गेट को तो पहले ही बंद कर दिया गया था। जनप्रतिनिधि और अधिकारी तो अपने कक्ष को सजाते संवारते रहते हैं। लेकिन छोटे कर्मचारी अपनी जान

जोखिम में डालकर विभागीय कार्य कर रहे हैं। भवन की जर्जर स्थित किसी से छुपी नहीं है। लेकिन अभी तक इस पर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया। पूरे नगरीय क्षेत्र के सुधार व विकास की जिम्मेदारी जिन जनप्रतिनिधि तथा सम्बंधित विभाग की होती है।आज वह खुद अपनी ही देख भाल करने में नाकाम साबित हो रहा है। यहां जनप्रतिनिधि अपनी गोटी सेट करने में लगे हुए हैं। और अधिकारी उदासीन है। यहां व्याप्त अव्यवस्थाओं का दंश यहां का आम नागरिक भुगत रहा है।जिसे कहीं भी देखा जा सकता है।

शहडोल में राज्य परिवहन निगम की स्मृतियाँ हुईं धूमिल, डिपो और बस स्टैंड की संपत्ति हुई नष्ट

विजयमत,शहडोल।

वर्ष 1995-96 में राज्य परिवहन निगम के संचालन पर विराम लगने के बाद शहडोल नगर में इसकी संपत्ति पूरी तरह से नष्ट हो गई। गोरतरा स्थित डिपो की भूमि नीलाम कर दी गई, वहीं पुराने बस स्टैंड पर स्थित टिकट काउंटर और बसों के ठहरने की जगह पर नगर पालिका ने कमर्शियल कॉम्प्लेक्स बना दिया। वर्तमान में गोरतरा में राज्य परिवहन निगम की एकमात्र निशानी के तौर पर एक टूटा-फूटा शेड और एक जर्जर बस बची है, जिसे जल्द ही वहां से हटा दिया जाएगा क्योंकि भूमि निजी निर्माण के लिए नीलाम हो चुकी है।
राज्य परिवहन के संचालन के लिए नगर में लगभग 100 से अधिक कर्मचारी नियुक्त थे, जिनमें चालक, परिचालक, क्लर्क, मैनेजर, टिकट काउंटर कर्मी, एनाउंसर, सुपरवाइजर, स्टोर कीपर और वर्कशॉप हेल्पर शामिल थे। इन सभी कर्मचारियों को निगम बंद होने के बाद अन्य विभागों में समायोजित कर दिया गया।
बढ़ते घाटे ने बंद करवाया संचालन
राज्य परिवहन का उद्देश्य आमजन की यात्रा सुविधा सुनिश्चित करना था, और इसके लिए शासन द्वारा अनुदान भी मिलता था। लेकिन बसों से प्राप्त आमदनी पर्याप्त नहीं हो रही थी। साथ ही निचले स्तर पर भ्रष्टाचार और गड़बड़ी के कारण वित्तीय घाटा बढ़ता गया। अंततः निगम को बंद करने का निर्णय लेना पड़ा।
किराए के डिपो से गोरतरा तक का सफर
शुरुआत में बस डिपो नगर के बुढ़ार चौक स्थित एक निजी परिसर में किराए पर संचालित होता था।

डिप्टी रेंजर पर रिश्वत मांगने का गंभीर आरोप

शहडोल। कमिश्नर से की गई शिकायत में डिप्टी रेंजर विजय प्रजापति पर वाहन चालक से रिश्वत मांगने का गंभीर आरोप लगाया गया है। आरोप है कि वाहन क्रमांक एम पी 18 जी ए 4623 के चालक अतुल सिंह गोंड़ पिता राजू सिंह निवासी ग्राम धनगवां के वाहन को रोककर डिप्टी रेंजर द्वारा 9 जुलाई को निजी भूमि से मिट्टी खुदाई कर मिट्टी ढुलाई का कार्य करते समय नरसरहा डिपो के पास 50 हजार रूपये की मांग की गई और कहा गया कि डीएफओ श्रद्ध पेन्ड्रे का आदेश है। यदि मिट्टी ढुलाई का काम करना है तो पैसा दो नहीं तो प्रकरण बनाकर तुम्हें जेल में डाल दूंगा। पैसा न देने पर अश्लील गालियां भी डिप्टी रेंजर द्वारा दी गई। कमिश्नर से कार्यवाही की मांग की गई है।

शास. महाविद्यालय जयसिंहनगर में मनाया गया गुरु पूर्णिमा उत्सव

जयसिंहनगर। गुरुवार 10 जुलाई 2025 को पंडित अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय जयसिंहनगर में उच्च शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश के निर्देशन में गुरु पूर्णिमा उत्सव कार्यक्रम भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित किया गया ।

सांसद, विधायक एवं कलेक्टर ने जल भराव वाले क्षेत्रों का किया भ्रमण

विजयमत,शहडोल।

शहडोल जिले में लगातार हो रही बारिश के कारण कई क्षेत्रों में जल भराव की स्थिति उत्पन्न हो रही है, विगत 5 एवं 6 जुलाई को लगातार हुई वर्षा अतिवृष्टि के कारण शहडोल नगर के विभिन्न क्षेत्रों में जल भराव की स्थिति बन गई थी जिससे आमजन जीवन प्रभावित हुआ था। बारिश को दृष्टिगत रखते हुए सांसद संसदीय क्षेत्र शहडोल श्रीमती हिमाद्री सिंह, कलेक्टर डॉ. केदार सिंह एवं विधायक श्रीमती मनीषा सिंह ने शहडोल नगर के टाकी नाला (कोटमा तिराहा), हाउसिंग बोर्ड सहित अन्य प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। जन प्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने नागरिकों से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं और आश्वासन दिया कि शीघ्र ही जल भराव प्रभावित क्षेत्रों से पानी निकालकर स्थिति सामान्य की जाएगी।
निरीक्षण के दौरान संबंधित अधिकारियों को पम्प सेट, सफाई कर्मी एवं आवश्यक संसाधन तत्काल उपलब्ध कराने और राहत कार्यों को प्राथमिकता देने के निर्देश

दिए गए। साथ ही सांसद ने जरूरतमंद लोगों को राशन का वितरण भी किया।निरीक्षण के दौरान अनु विभागीय अधिकारी राजस्व अरविंद शाह, पूर्व अध्यक्ष महिला वित्त विकास निगम श्रीमती अमिता चपरा, उपाध्यक्ष नगर पालिका प्रवीण शर्मा,भूपेंद्र मिश्र, सुशील शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

वर्षाकाल में आंखों की बीमारियों से बचने की सलाह

शहडोल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश मिश्रा ने जानकारी देते हुए बताया कि मानसून के दौरान बहुत से लोगो को आंखो से संबंधित बीमारियां हो जाती हैंए जैसे आंखो में खुजली एवं आंखे लाल हो जाती हैं,चिपचिपी हो जाती हैं, सफेद और पीले रंग का पदार्थ जमा हो जाता है। इस रोग को आई फ्लू, कंजक्टिवाईटिस, या आखे आना के रूप में जाना जाता है। कंजेक्टिवाइटिस का संक्रमण आपसी संपर्क के कारण फैलता है, इस रोग का वायरस संक्रमित मरीज के उपयोग की किसी भी वस्तु जैसे, रूमाल, तौलिया, टॉयलेट की टॉटी, दरवाजे का हैंडल, टेलीफोन के रिसीवर से दूसरों तक पहुंचता हैए कम्प्यूटर का की बोर्ड भी इसे फैलाने में सबसे बड़ा सहायक साबित होता है। आंखे आने पर बार-बार अपने आंख एवं चेहरे को ठंडे पानी से धोवेए परिवार के सभी सदस्य अलग.अलग तौलिये एवं रूमाल का उपयोग करे। स्वच्छ पानी का उपयोग करें, बार- बार आंखों मे हाथ ना लगाएं।

अव्यवस्था

मुख्य सड़कें दिख रही स्वच्छ, पर वार्डों की गलियां बनीं कचरे का ठिकाना

बुढ़ार नगर में गंदगी का अंबार, नगरपालिका की लचर व्यवस्था से जनता परेशान

विजयमत,शहडोल।

बुढ़ार नगर में सफाई व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। नगर पालिका प्रशासन की अनदेखी और कर्मचारियों की लापरवाही के चलते कस्बे में जगह-जगह कचरे के ढेर लगे हैं। मुख्य मार्ग तो किसी तरह साफ-सुथरा दिख रहा है, लेकिन वार्डों की गलियां मानो कूड़ादान में तब्दील हो चुकी हैं। उपला बाजार, दीवान गली, पटा चौक, पुराना बस स्टैंड जैसे क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।

कर्मचारी सिर्फ कचरा इकट्ठा कर छोड़ देते हैं

नगर पालिका द्वारा सफाई के लिए कर्मचारी तो नियुक्त हैं, लेकिन ये कर्मचारी केवल कचरा इकट्ठा कर उसे एक कोने में छोड़ देते हैं। उचित मॉनिटरिंग के अभाव में कचरा उठाव की

व्यवस्था ठप है। परिणामस्वरूप इन ढेरों से उठती दुर्गंध और गंदगी से राहगीरों को परेशानी हो रही है।

लाखों की सफाई राशि पर उठ रहे सवाल

नगर परिषद हर माह लाखों रुपये सफाई व्यवस्था पर खर्च कर रही है, लेकिन धरातल पर इसका असर न के बराबर है। न पार्षद सजग हैं, न अधिकारी गंभीर। जिन वार्डों से पार्षद भी भाजपा से हैं, वहां भी गंदगी का यही हाल है। आमजन बार-बार शिकायत करने के बावजूद सुनवाई नहीं हो रही है।

स्वच्छ बुढार का सपना धरा रह गया

नगर में स्वच्छता अभियान के दावे बेमानी साबित हो रहे हैं। हालात ये हैं कि नालियां जाम हैं, गलियां गंदी हैं और सड़कों पर कचरे के ढेर लगे हैं। होली जैसे त्योहारों के बाद भी समय पर कचरा नहीं उठाया गया जिससे समस्या और बढ़ गई है।

बीमारियों का बना खतरा, लोग खुद उठा रहे कदम

घर के पास कचरा होने से लोग संक्रमित बीमारियों के खतरे से डरे हुए हैं। नाली के पास जमा कचरे से उठती दुर्गंध और मच्छरों ने लोगों की रात की नींद और दिन का सुकून छीन लिया है। लोग खुद आसपास की सफाई कर रहे हैं, परंतु नगरपालिका प्रशासन बेपरवाह है।

कूड़े के ढेर में भोजन ढूंढते जानवर

नगर में कचरे के ढेरों से आवारा जानवर भोजन ढूंढते हैं, जिससे रास्ता जाम हो जाता है और राहगीरों को असुविधा होती है। इन जानवरों से दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि जब तक प्रशासन कार्रवाई नहीं करेगा, तब तक यह गंदगी और परेशानी खत्म नहीं होगी।

संस्थापक
श्री रामसिपाही शुक्ल

सुंदर दिखने मौत को गले लगाते युवा

वर्तमान समाज में सुंदरता की परिभाषा इतनी विकृत हो चुकी है। युवा वर्ग अपने जीवन को दांव पर लगाने में भी संकोच नहीं कर रहा है। अभिनेता शेखर सुमन के बेटे अध्ययन सुमन की प्रेमिका दिवंगत अभिनेत्री सैफाली की असामयिक मृत्यु ने इस विकृत मानसिकता पर हम सभी का ध्यान खींचा है। आज के दौर में खूबसूरत दिखना एक बड़ी मानसिक बीमारी बन गई है। जीवन जीने के लिए सुंदर शरीर का होना जरूरी है? इसको लेकर एक नई मानसिकता युवा वर्ग में देखने को मिल रही है। शरीर की फिटनेस, ग्लोइंग स्किन, परफेक्ट फिगर, इंस्टाग्राम-रेडी चेहरा जैसी सोच ओर मान्यताएं युवा वर्ग, जिसमें लड़के और लड़की दोनों हैं, इस सोच के शिकार हैं। अधेड़ उम्र में यह मानसिकता और भी खतरनाक हो जाती है। जब धीरे-धीरे उम्र का असर शरीर पर दिखने लगता है। अधेड़ वर्ग कुंठा का शिकार होने लगाता है। युवाओं में सोशल मीडिया की दिखावटी दुनिया ने सुंदरता के मायने शक्ल-सूरत ड्रेस और बाहरी सौंदर्य तक सीमित कर दिया है। वर्तमान पीढ़ी में आत्म मूल्यांकन का आधार विचार, व्यवहार या ज्ञान नहीं, बल्कि शरीर का सौंदर्य और पहनावा स्टेटस सिम्बल बन गया है। स्किन-फेयरनेस क्रीम, बोटॉक्स, सर्जरी, डाइटिंग, स्टेरॉयड और महंगे कॉस्मेटिक ट्रीटमेंट जैसे रसायनों के पीछे भाग रहे है। युवा, अधेड न केवल अपनी असल पहचान खो बैठते हैं, बल्कि धीरे-धीरे मानसिक बीमार बनाकर अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। अब तो हद हो गई है जब युवा और अधेड़ आत्महत्या जैसे कृत्य करने लगे हैं। सुंदर दिखने और फैशन की इस होड़ ने युवाओं के आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान को खोखला कर दिया है। बॉलीवुड से लेकर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के बाद यह बीमारी अब समाज के मध्यम एवं निम्न वर्ग तक तेजी के साथ फैलती चली जा रही है। सभी नकली और अवास्तविक सौंदर्य मानक के साथ जीने की कोशिश कर रहे हैं।

नोट

सम्पादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित लेख-आलेख एवं विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं अतः यह जरूरी नहीं है कि विजय मत समूह उपरोक्त लेख या विचारों से सहमत हो। किसी लेख से जुड़े सभी दावे या आपत्ति के लिए सिर्फ लेखक ही जिम्मेदार हैं।

जनसंख्या नीति नहीं, जनजागरूकता है असली समाधान

योगेश कुमार गोयल

जनसंख्या संबंधित समस्याओं पर वैश्विक चेतना जागृत करने के लिए प्रतिवर्ष 11 जुलाई को 'विश्व जनसंख्या दिवस' मनाया जाता है। भारत के संदर्भ में देखें तो तेजी से बढ़ती आबादी के कारण ही हम सभी तक शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों को पहुंचाने में पिछड़ रहे हैं। बढ़ती आबादी की वजह से ही देश में बेरोजगारी की समस्या विकराल हो चुकी है। हालांकि विगत दशकों में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से नए रोजगार जुटाने के कार्यक्रम चलाए गए लेकिन बढ़ती आबादी के कारण ये सभी कार्यक्रम 'ऊंट के मुंह में जीरा' ही साबित हुए। बढ़ती जनसंख्या के कारण ही देश में आबादी और संसाधनों के बीच असंतुलन बढ़ता जा रहा है। वास्तविकता यही है कि विगत दशकों में देश की जनसंख्या जिस गति से बढ़ी, उस गति से कोई भी सरकार जनता के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने की व्यवस्था करने में सफल हो ही नहीं सकती थी। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों की सफलता के लिए सर्वाधिक जरूरी यही है कि घोर निर्धनता में जी रहे ऐसे लोगों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों के महत्व के बारे में जागरूक करने की ओर खास ध्यान दिया जाए क्योंकि जब तक इस कार्यक्रम में इन लोगों की भागीदारी नहीं होगी, तब तक लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं है।

> आज देश की बहुत बड़ी आबादी निम्न स्तर का जीवन जीने को विवश है। देश में करीब 40 प्रतिशत आबादी आजादी के बाद से ही गरीबी के आलम में जी रही है। गरीबी में जीवन गुजार रहे ऐसे बहुत से लोगों की यही सोच रही है कि उनके यहां जितने ज्यादा बच्चे होंगे, उतने ही ज्यादा कमाने वाले हाथ होंगे किन्तु यह सोच वास्तविकता के धरातल से परे है। लगातार बढ़ती महंगाई के जमाने में परिवार बड़ा होने से कमाने वाले हाथ ज्यादा होने पर जितनी आय बढ़ती है, उससे कहीं ज्यादा जरूरतें और विभिन्न उत्पादों की कीमतें बढ़ जाती हैं, जिनकी पूर्ति कर पाना सामर्थ्य से परे हो जाता है।

देश में जनसंख्या वृद्धि का मुकाबला करने के लिए पिछले काफी समय से कुछ कड़े कानून बनाने की मांग हो रही है लेकिन इस दिशा में कुछ राज्य सरकारें दो से ज्यादा बच्चों वाले परिवारों को सरकारी नौकरी तथा स्थानीय निकाय चुनावों में उम्मीदवारी से अयोग्य अघोषित करने जैसे जिस तरह के उपायों पर विचार कर रही हैं, उन्हें तर्कसंगत नहीं माना जा सकता। हालांकि जनसंख्या वृद्धि मौजूदा समय में गंभीर चुनौती है लेकिन ऐसे उपायों को संवैधानिक नजरिये से भी तर्कसम्मत नहीं माना जाता। चीन में 1980 से पहले केवल एक बच्चा पैदा करने की अनुमति थी, जिसका उल्लंघन करने पर दम्पति को न केवल सरकारी योजनाओं से वंचित कर दिया जाता था बल्कि सजा भी दी जाती थी लेकिन वहां यह नीति सफल नहीं हुई। इसीलिए चीन सरकार ने 2016 में इस नीति में बदलाव कर दो बच्चों की अनुमति दी और बाद में तीन बच्चों की अनुमति देनी पड़ी। चीन की तानाशाही सरकार द्वारा नीतियों में बड़ा बदलाव करते हुए दम्पत्तियों को तीन बच्चे करने की अनुमति क्यों दी गई, इसके कारण समझना भी जरूरी है। दरअसल वहां लोगों की सामान्य प्रजनन दर में निरन्तर गिरावट आ रही है और कुछ विशेषज्ञों के मुताबिक यही स्थिति भारत में भी होनी है।

जनसंख्या में स्थायित्व और कामकाजी युवाओं की स्थिर संख्या के लिए महिलाओं की सामान्य प्रजनन दर 2.1 होनी चाहिए और चीन में यह दर निरन्तर गिर रही है। 1970 में चीन में यह दर 5.8 थी, जो 2015 में घटकर 1.6 और 2020 में केवल 1.3 ही रह गई जबकि बुजुर्गों की आबादी लगातार बढ़ती गई। नेशनल ब्यूरो ऑफ स्टेटिस्टिक्स (एनबीएस) के अनुसार आने वाले समय में आबादी में अधिक उम्र वालों की संख्या बढ़ने से संतुलित विकास और जनसंख्या को लेकर दबाव बढ़ेगा। 1982 में हुई जनगणना में चीन की जनसंख्या में 2.1 फीसदी की सबसे ज्यादा वृद्धि दर्ज की गई थी लेकिन उसके बाद जनसंख्या में लगातार गिरावट दर्ज की गई, जिसके लिए वहां की कम्युनिस्ट सरकार द्वारा अपनाई गई दशकों पुरानी 'वन चाइल्ड पॉलिसी' को जिम्मेदार माना जाता है। विगत एक दशक में चीन की जनसंख्या करीब सात करोड़ बढ़ी लेकिन बुजुर्गों की संख्या बढ़ने से चीन के लिए अलग ही समस्या उत्पन्न होने लगी है। दरअसल चीन को आशंका है कि अगले दस वर्षों में उसकी जनसंख्या में गिरावट आएगी, जिससे कामगारों की संख्या में कमी आने से उसकी खपत भी घटेगी। एनबीएस के आंकड़ों के मुताबिक चीन को जिन जनसांख्यिकीय संकट का सामना करना पड़ा था, वह और गहरा होने की उम्मीद थी, इसीलिए चीन को अपनी जनसंख्या नीति में बदलाव करने पर विवश होना पड़ा।

विश्व जनसंख्या दिवस पर विशेष

जहां तक भारत की बात है तो यहां 1994 में महिलाओं की सामान्य प्रजनन दर 3.4 थी, जो घटकर 2015 में 2.2 रह गई थी यानी सामान्य के करीब। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार भारत की जनसंख्या 2050 तक बढ़ने के बाद से गिरनी शुरू हो जाएगी और 2100 तक पहुंचते-पहुंचते सामान्य प्रजनन दर केवल 1.3 ही रह जाएगी। इसका अर्थ है कि तब अधिकांश परिवारों में केवल एक ही बच्चा होगा और भारत उसी स्थिति में खड़ा होगा, जिसमें वन चाइल्ड पॉलिसी के बाद चीन खड़ा हुआ और उसे विगत सात वर्षों में दो बार अपनी जनसंख्या नीति में बड़ा परिवर्तन करना पड़ा। इसलिए टू चाइल्ड पॉलिसी जैसे कानूनों के जरिये जनसंख्या नियंत्रण की कोशिशों को व्यावहारिक नहीं माना जा रहा बल्कि इसके लिए डराने-धमकाने वाले कानूनों के बजाय लोगों में जागरूकता पैदा किया जाना सबसे जरूरी है। बगैर कड़े कानूनों के देश के ऐसे राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आई है, जहां साक्षरता दर ज्यादा है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार भारत में गरीब महिलाओं की प्रजनन दर करीब 3.2 है जबकि सम्पन्न महिलाओं में यह दर केवल 1.5 पाई गई है। इसी प्रकार अनपढ़ महिलाओं के औसतन 3.1 बच्चे होते हैं जबकि शिक्षित महिलाओं में यह संख्या औसतन 1.7 है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जनसंख्या विस्फोट का सीधा संबंध सामाजिक और शैक्षिक स्थितियों से जुड़ा है। शिक्षा के अभाव में ही देश की बड़ी आबादी को छोटे परिवार के लाभ को लेकर जागरूक नहीं किया जा सका है।

(यह लेखक के निजी विचार हैं)- साभार

विश्व में बढ़ती जनसंख्या एक विस्फोट : जिम्मेदार कौन?

नरेन्द्र भारती

बेशक 11 जुलाई 2025 को दुनिया के देशों में विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जा रहा है मगर ऐसे दिवस औपचारिकता मात्र रह गए है। 2025 में जनसंख्या दिवस का थीम युवाओं को एक निष्पक्ष और आशापूर्ण विश्व में अपने मनचाहे परिवार बनाने के लिए सशक्त बनाना रखा गया है द्यहर साल विश्व में एक संकल्प लिया जाता है कि जनसंख्या को नियंत्रित किया जाएगा मगर धरातल पर कुछ नहीं होता। साल 1989 से जनसंख्या दिवस को मनाने का निणर्य लिया गया था। बढ़ती जंनसंख्या बहुत ही चिंतनीय विषय है। आज हमारे देश की जनसंख्या 146 करोड़ से अधिक है यह दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है द्य चीन की आबादी एक सौ चालीस करोड़ से अधिक है। 1947 में भारत की जनसंख्या 34 करोड़ थी द्यहर निरंतर बढ़ती ही जा रही है। बढ़ती जनसंख्या चिंता का सबब बनती जा रही है। विश्व की जनसंख्य 8.180 बिलियन है। 1918 में 1.8 बिलियन थी। देश के लोगों को आज जनसंख्या को नियंत्रित करने का संकल्प लेना होगा। भारत व चीन विश्व के अधिक जनसंख्या वाले देश है। प्रतिवर्ष जनसंख्या दिवस पर लोगों को जागरुक किया जाता है। सैमीनार लगाए जाते है रैलीयां निकाली जाती है। मगर एक दिन के दिवस से जनसंख्या को रोकना नाकाफी है। नुकड नाटकों के माध्यम से लोगों को जनसंख्या से हो रही मुश्किलों से अबगत कराया जाता है। मगर लोगों के सिर जूं तक नहीं रेंगती। जनसंख्या के बढ़ते काफिले को रोकना होगा। सरकारों द्वारा जनसंख्या के बढ़ते सैलाब को रोकने के लिए चलाए जा रहे अभियानों पर करोंडों रुपया खर्च किया जाता है। विश्व में जनसख्या बढ़ती ही जा रही है। जनसंख्या रोकने के लिए सरकारों के प्रयास विफल होते जा रहे है। लोगों द्वारा मनमानी की जा रही है। सरकार जनसंख्या को रोकने के लिए कई अभियान चला रही है। हम दो हमारे दो का नारा दिया गया मगर किसी ने भी इस पर अमल नहीं किया। लड़के की चाह में आधा दर्जन तक बच्चे पैदा कर लिए। आज लड़का-लड़की में भेदभाव किया जा रहा है। आज सब बराबर है। अगर छोटा परिवार होगा तो हर आदमी सुखी जीवन जी सकता है। कुछ मनमानी करने वालों ने क्रिकेट की टीमें पैदा कर दी है। आज जनसंख्या का विकराल रुप होता जा रहा है।

(यह लेखक के निजी विचार हैं) -साभार

त्रासदी : सैलाब के मजे में जनसैलाब

हेमेन्द्र क्षीरसागर

देश में इन दिनों चहुंओर मानसूनी बारिश खूब बरस रही है। सालों बाद जरूरत के मुताबिक ऐसी बारिश देखने को मिली। हां बरखा से जीवन व जमीन को सुविधा और दुविधा साथ-साथ हो रही है। आलम कहीं सूखे से राहत तो कहीं बाढ़ की आफत तो कहीं फसल की खुशामत तीनों हद की हिमाकत पर है। येही तो असली कुदरत का करिश्मा है। जिसे हम मानव अपनी होशियारी व हरकत से हुकूमत समझते आए हैं। नतीजतन पानी-पानी के लिए त्राहिमाम- त्राहिमाम होना हमारी फितरत बन गई है। बकौल गंदगियों से जिंदगियां तबाह, पावन सलिला आचमन होकर सूखे कंठ और जमीं को तृप्त नहीं कर पा रही है। बावजूद सबक लेना तो दूर उसके कारक भी मानव रूपी दानव बे-रोक टोक बनते जा रहे हैं।

> हां बरखा से जीवन व जमीन को सुविधा और दुविधा साथ-साथ हो रही है। आलम कहीं सूखे से राहत तो कहीं बाढ़ की आफत तो कहीं फसल की खुशामत तीनों हद की हिमाकत पर है। येही तो असली कुदरत का करिश्मा है। जिसे हम मानव अपनी होशियारी व हरकत से हुकूमत समझते आए हैं। नतीजतन पानी-पानी के लिए त्राहिमाम- त्राहिमाम होना हमारी फितरत बन गई है। बकौल गंदगियों से जिंदगियां तबाह, पावन सलिला आचमन होकर सूखे कंठ और जमीं को तृप्त नहीं कर पा रही है। बावजूद सबक लेना तो दूर उसके कारक भी मानव रूपी दानव बे-रोक टोक बनते जा रहे हैं।

प्रकृति अनमोल धरोहर

ये भूलते हुए कि प्रकृति हमारी आने वाली पीढ़ी की अनमोल धरोहर है। उसे संजोए रखने के बजाए नेस्तनाबूत करने में प्राणपण से जुटे हुए हैं। इसीलिए प्रकृति भी अपना हिसाब समय-समय पर पूरा कर देती है। ऐसे में भी जल प्लावन, अतिवृष्टि, भूकंप, भूस्खलन, दुर्घटना और आगजनी जैसी त्रासदी में हमारी मजे की चाहत हिलौरें मारती नहीं थकती। ऐसा ही मंजर हालिया घरों, सड़कों, नदी, नालों और तालाबों में आई विनाशकारी उफान में दिखाई पढ़ा। जहां जल प्रलय, सैलाब में उमड़े जनसैलाब ने चलो, चलें बाढ़ का मजा ले कहने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। जैसे समुद्र का तट, झील की ठंड़क और वादियों का मनोहारी आबोहवा हो वैसे ही ललक से त्रासदी का मनचाहा लुत्फ उठाने में सिरमौर रहे।

बर्बादी का कहर

वीभत्स! विनाश पर तमाशबीनों ने गजब का तमाशा बनाया। बे-खबर राहगिरों, बीमार और जरूरतमंदों की आवाजाही में अड़ंगा लगाए रखा चाहे रास्ता जलमग्न ही क्यो ना हो? तथा मौके पर राहत में जुटा अमला और सुरक्षा कर्मी मुसीबत में फंसे त्रस्त को छोड़कर मजाकियां ग्रस्त को समझाते, झड़काते तथा हटाते रहने में मजबूर रहा। बावजूद नुक्ता-चिनी और नुराकुश्ति में मशगूल बेदरंगी अपना रौब झाड़ते हुए अपने यारों को दूरभाष यंत्र पर आंखों देखा हाल, चित्र और चलचित्र दिखाकर बर्बादी का कहर देखने न्यौता देते रहे। बिना देर गंवाए यारी भी ऐसी निभी की पलक झपकते ही शागिर्दों का रैन बसैरा वाहनों का काफिला लेकर सड़कों पर धमाचौकड़ी मचाते रहा। और तबाही का हर सुख लेते तक टस से मस नहीं हुआ, जब तक पानी खतरे से नीचे नहीं आया।

बेखौफ जमघट

बद्स्तुर यहां वक्त की दुहाई देते थकने नहीं वाले सरकारी नुमाइंदे, राजनैतिक आकाओं, डाक्टरों और व्यापार जगत के साहूकारों का जमघट बेखौफ, नफे नुकसान बैगर नाश को शान से देखता रहा। बरबस, तसल्ली से प्रफुल्लित मुद्रा में नाते- रिश्तेदारों को महाप्रलय की अजर- अमर खुशखबरी सुनाई। खातिरदारी में फुटकर चना, फल्ली, मक्का, चाय, पान और मंगोड़े इत्यादि बेचने वालों ने मौके का फायदा उठाकर मेहनत की कमाई कर ली।

विपदा के गुनाहगार

काश! इतनी ही शिद्दत, दौलत और मेहनत आपदा व बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए कर दी जाती तो डूबते को तिनके का सहारा हो जाता। कई उजड़े घरों को परछाई, बीमार को दवाई, बच्चों को पढ़ाई, बेरोजगारों को कमाई, किसान को उपज की भरपाई और गरीबों की भलाई हो जाती। लेकिन चंद मुठ्ठी भर सेवादानों और सरकारी मोहकमों के अलावा किसी ने इनकी परवाह तक नहीं की। उलट छोड़ दिया हालातों पर अपने नयन सुख के निहारने के वास्ते मौजदारों ने। गफलतबाजी में कि इस विपदा के वाकई कोई गुनाहगार है तो हम है और हम ही है, जिसका परिणाम आज दूजे तो कल हमें भोगना है।

बेरुखी से दरकिनार

अलबत्ता, बचाव ही उपाय है यह मूल मंत्र हमें प्रलयकारी मुसीबतों से बचा सकता है। इसके लिए हमें समय रहते कारगर कदम उठाने की जरूरत है। जो हम बेरुखी में सालों से दरकिनार करते आए हैं। प्रतिफलन सूखा, बाढ़ और भूस्खलन आदि दिक्कतें जन-जीवन तथा परि आवरण को आगोश में ले रही हैं।

प्रकृति का विदोहन

लिहाजा, अब बिना देर गंवाए अवैध उत्खनन- प्रदूषण रोकने, जल- जंगल- जमीन- पशुधन बचाने, वृक्ष बनाने, जैविक खेती को बढ़ावा, कांक्रीट के संजाल से मुक्ति और स्वच्छता के ईमानदारी से ठोस प्रयास करने पड़ेंगे। समेत हर घर रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, जल सोख पीड़, पेड़ का मनोपयोग और कमशकम जिला स्तर पर नदी- नाला- तालाबों को जोड़ने की परिकल्पना जल संरक्षण के निहितार्थ साकार करना होगा। तब ही सही मायनों में प्रकृति का विदोहन सजा की जगह मजा की सुखद अनुभूति देंगा।

(यह लेखक के निजी विचार हैं)- साभार

शब्द पहेली - 8424

■	1		2	■	3		4	■
5		■		■		■	6	7
	■	■	8	9		10	■	
11		12	■		■	13		
■	■	14		■	15		■	■
16			■	17	■	18		19
	■	20	21		22	■	■	
23	24	■		■		■	25	
■	26			■	27			■

बाएँ से दाएँ

1. नियंत्रण, घोड़े की रास-3
3. ध्वज, झंडा-3
5. माहिर, होशियार-2
6. बेल, लतिका-2
8. अस्वीकृत करना-4
11. अदृश्य-3
13. फटकार, धिक्कार-3
14. अधर, होठ-2
15. सलाह, सुझाव-2
16. आश्रय-3
18. अनुमान, अंदाज-3
20. आलता, माहुर-4
23. नासिका-2
25. रहस्य-2
26. रेखा, लाइनू-3
27. परिमूल्य-3

ऊपर से नीचे

1. लाख, सौ हजार-2
2. बारीक, सूक्ष्म-3
3. तीन घंटे का समय-3
4. समय, वक्त-2
5. कोतवाल-3
7. बल, जोर, दम-3
9. श्रवणेंद्रिय-2
10. जो लायक न हो-4
12. कृष्ण के बड़े भाई-4
16. दर्पण, शीशा-3
17. नौका -2
19. आसान, सरल-3
21. उपस्थित-3
22. रस से भरा-3
24. बीता हुआ दिन-2
25. रजनी, निशा-2

शब्द पहेली -8423 का हल

■	आ	र	ति	■	अ	ना	मि	का
आ	ना	■	ल	जी	ज	■	■	र
ले	■	श	मि	■	र	न	■	तू
ख	ल	ब	ला	ना	■	र	ई	स
■	ग	■	ना	■	म	■	मा	■
ख	न	न	■	म	नो	न	न	य
लि	■	ल	क	■	रं	ग	■	ती
हा	■	■	हा	फि	ज	■	का	म
न	स	वा	र	■	न	ज	ला	■

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

दैनिक पंचांग

11 जुलाई 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मिथुन में	कर्क	05.49 बजे से
चंद्र	धनु में	सिंह	08.06 बजे से
मंगल	सिंह में	कन्या	10.17 बजे से
बुध	कर्क में	तुला	12.28 बजे से
गुरु	मिथुन में	वृश्चिक	14.43 ब.से
शुक्र	वृष में	धनु	16.59 बजे से
शनि	मीन में	मकर	19.04 बजे से
राहु	कुंभ में	कुंभ	20.50 बजे से
केतु	सिंह में	मीन	22.23 बजे से
राहुकाल	10.30 से 12.00 बजे तक	मेष	23.54 बजे से
		वृष	01.34 बजे से
		मिथुन	03.32 बजे से

शुक्रवार 2025 वर्ष का 192 वा दिन **दिशाशूल** पश्चिम **ऋतु** वर्षा। **विक्रम संवत्** 2082 **शक संवत्** 1947 **मास** श्रावण (दक्षिण भारत में आषाढ) **पक्ष** कृष्ण **तिथि** प्रतिपदा 02.09 बजे रात्र को समाप्त। **नक्षत्र** पूर्वाषाढ़ा 05.56 बजे को समाप्त। **योग** वैधृति 20.44 बजे को समाप्त। **करण** बालव 14.11 बजे तदनन्तर कौलव 02.09 बजे रात्र को समाप्त। **चन्द्रायु** 15.6 घण्टे **रवि क्रान्ति** उत्तर 22° 06' **सूर्य** उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1872402 **जूलियन दिन** 2460867.5 **कलियुग संवत्** 5126 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2551 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** मोहर्रम **तारीख** 15

दिन का चौघड़िया				रात का चौघड़िया			
चर	05.55 से	07.23 बजे तक		रोग	05.38 से	07.1	बजे तक
लाभ	07.23 से	08.51 बजे तक		काल	07.11 से	08.43	बजे तक
अमृत	08.51 से	10.19 बजे तक		लाभ	08.43 से	10.15	बजे तक
काल	10.19 से	11.47 बजे तक		उद्वेग	10.15 से	11.47	बजे तक
शुभ	11.47 से	01.15 बजे तक		शुभ	11.47 से	01.19	बजे तक
रोग	01.15 से	02.43 बजे तक		अमृत	01.19 से	02.51	बजे तक
उद्वेग	02.43 से	04.10 बजे तक		चर	02.51 से	04.23	बजे तक
चर	04.10 से	05.38 बजे तक		रोग	04.23 से	05.55	बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- **शुभत्व श्रेष्ठ** शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

न्यूज इन शॉर्ट

अनियंत्रित होकर पलटा तूफान वाहन

उमरिया। नौरोजाबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत घुलघुली-नरवार मार्ग स्थित बड़ी पुल पर अनियंत्रित होकर तूफान वाहन पलट जाने का समाचार प्रकाश में आया है। बताया जाता है कि घटना के समय तूफान वाहन खाली था। प्राप्त जानकारी अनुसार तूफान वाहन एमपी 20 टीए1981अनियंत्रित होकर पलट गया। घटना के बाद वाहन चालक, ग्राम रहटा निवासी धनी राम को स्थानीय ग्रामीणों ने तत्परता दिखाते हुए घायल चालक को बाहर निकाला और प्राथमिक उपचार के लिए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र भेजा। सूत्रों की माने तो वाहन चालक नशे मे धुत था, जिसकी वजह से वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया। बताया जा रहा है कि यह तूफान वाहन रोजाना रहटा से उमरिया तक सवारियों को ढोता है, और हादसे से कुछ देर पहले भी यह सवारियां भरने की तैयारी में था।

विश्व जनसंख्या दिवस अभियान आज से 11 अगस्त तक आयोजित किया जाएगा

उमरिया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर वी एस चंदेल ने बताया कि विश्व जनसंख्या दिवस एक अभियान के रूप में मनाए जाने हेतु 11 जुलाई से 11 अगस्त तक विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों में एवं ग्राम स्तर पर आशा कार्यकर्ता एएनएम द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह अभियान जनसंख्या से जुड़े विभिन्न मुद्दों के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। वर्ष 2025 हेतु थीम युवाओं को एक निश्चय और आशावान दुनिया में अपने मनचाहे परिवार बनाने के लिए सशक्त बनाना है वहीं जिला परिवार कल्याण अधिकारी डॉक्टर एस बी चौधरी द्वारा बताया गया जनसंख्या वृद्धि की दर को कम करने हेतु जन जागरूकता बढ़ाना परिवार नियोजन स्वास्थ्य सेवाओं और गर्भनिरोधक उपायों के प्रति जागरूकता फैलाना लैंगिक समानता युवा सशक्तिकरण शिक्षा प्रजनन स्वास्थ्य और मातृ एवं शिशु मृत्यु जैसे मुद्दों के प्रति जागरूकता लाना है। जनसंख्या वृद्धि से स्वास्थ्य प्रणाली पर बोझ बढ़ता है एक परिवार में शिक्षा बेरोजगारी के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन प्रदूषण वन क्षेत्र में कमी और जैव विविधता पर संकट विचाराधीन स्थिति बनी हुई है उन्होंने बताया की जनसंख्या वृद्धि झुग्गी बस्तियों का विस्तार,यातायात,प्रदूषण और सामाजिक असमानताओं समस्याएं बनी हुई है उन्होंने बताया कि उक्त अभियान के तहत दिनांक 11 जुलाई से 11 अगस्त तक ग्राम स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चौपाल सामूहिक चर्चा परामर्श परिवार नियोजन के साधनों पर चर्चा परामर्श देकर जागरूक किया जाएगा।

जिला मानीटरिंग कमेटी ऑन एक्सेसिबल इलेक्शन न समिति गठित

उमरिया। भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के निर्देशानुसार जिले के लिए जिला स्तर पर दिव्यांगों व वरिष्ठ नागरिकों की चुनाव प्रक्रिया में अधिकतम सहभागिता व साझेदारी को सुनिश्चित करने, उनको दी जा रही सुविधाओं की समीक्षा एवं उपायों को कारगर बना कर चुनावी प्रक्रिया को और अधिक सुलभ बनाने हेतु आंशिक संशोधन करते हुए जिला स्तर पर जिला मानीटरिंग कमेटी ऑन एक्सेसिबल इलेक्शन समिति का गठन कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन की अध्यक्षता में किया गया है, जिसमें जिला सूचना विज्ञान केंद्र अधिकारी, उप संचालक सामाजिक न्याय एवं निषक्त जन विभाग, जिला षिक्षा अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग, सहायक आयुक्त आदिवासी विकास, सहायक संचालक जनसंपर्क, परियोजना अधिकारी जिला शहरी विकास अभिकरण प्रदीप पटले विषेष षिक्षक जिला दिव्यांग एवं पुर्नवास केंद्र सदस्य, हिमांषु तिवारी सिविल सोसायटी सदस्य एवं सामाजिक कार्यकर्ता तथा सोहनलाल चर्मकार दीन हीन दिव्यांग संगठन उमरिया अषासकीय सदस्य शामिल है। जिला स्तरीय मानीटरिंग कमेटी भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के निर्देषानुसार कार्यवाही करना सुनिष्चित करेगी।

जिला मानीटरिंग कमेटी ऑन एक्सेसिबल इलेक्शन की बैठक 14 जुलाई को

उमरिया। भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश भोपाल के निर्देशानुसार जिले के लिए जिला स्तर पर दिव्यांगों व वरिष्ठ नागरिकों की चुनाव प्रक्रिया में अधिकतम सहभागिता व साझेदारी को सुनिश्चित करने, उनको दी जा रही सुविधाओं की समीक्षा एवं उपायों को कारगर बना कर चुनावी प्रक्रिया को और अधिक सुलभ बनाने हेतु जिला स्तरीय समिति जिला मानीटरिंग कमेटी ऑन एक्सेसिबल इलेक्शन का पुर्नगठन किया गया है। समिति के सभी सदस्यों को आयोग के निर्देशों से अवगत कराने के संबंध में 14 जुलाई को अपरान्ह 12.30 बजे से टी0एल0 बैठक की समाप्ति उपरांत कलेक्टर सभागार कक्ष में बैठक का आयोजन किया गया है। बैठक में सर्व संबधितों से उपस्थिति की अपेक्षा की गई है।

जिले में बीते 24 घंटे में 9.6 मिमी वर्षा दर्ज

उमरिया - अधीक्षक भू अभिलेख ने बताया कि जिले में बीते 24 घंटे में 9.6 मिमी वर्षा दर्ज की गई है जिसमें बांधवगढ मे 4.9 मिमी, मानपुर में 36.5 मिमी, पाली मे 8.4 मिमी, नौरोजाबाद में 6.2 मिमी, चंदिया में 19 मिमी, करकेली में 2.5 मिमी, वर्षा शामिल है। जिले में 1 जून से लेकर आज दिनांक तक 508 मिमी वर्षा दर्ज की गई है जिसमें बांधवगढ मे 470.3 मिमी, मानपुर में 496.2 मिमी, पाली मे 866.2 मिमी, नौरोजाबाद में 454.6 मिमी, चंदिया में 723.8, करकेली में 397.7 मिमी, बिलासपुर में 616.8 मिमी वर्षा शामिल है।

गुरु पूजन कर शिष्यों ने लिया आशीर्वाद

गुरु पूर्णिमा पर मंदिरों में हुए धार्मिक अनुष्ठान

विजय मत, उमरिया।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को हर वर्ष गुरु पूजन का पर्व गुरु पूर्णिमा मनाया जाता है। इस पूर्णिमा तिथि पर गुरु की पूजा की जाती है। धार्मिक .ष्टि से इसका बड़ा ही महत्व है। इस बार गुरु पूर्णिमा के दिन कई शुभ योग भी बने हैं। गुरु के बनि न तो जीवन की सार्थकता है और न ही ज्ञान प्राप्ति संभव है। जसि तरह हमारी प्रथम गुरु मां हमें जीवन देती हैं और सांसारकि मूल्यों से हमारा परचिय कराती हैं, ठीक उसी तरह ज्ञान और भगवान की प्राप्ति का मार्ग केवल एक गुरु ही दखिा सकता है। यानी कि गुरु के बनि कुछ भी संभव नहीं है। सनातन संस्ति में गुरु को देवता तुल्य माना गया है। गुरु को हमेशा से ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूज्य माना गया है। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर स्थानीय सागरेश्वर धाम सगरा मंदिर में अयोध्या के पंडित श्री राम शंकर दास जी महाराज वेदान्ती के शिष्यों द्वारा

धार्मिक अनुष्ठान सम्पादित किया गया। गुरु महाराज के शिष्यों ने गुरु जी की पूजा अर्चना करने के साथ पुष्प अर्पित किए। वही काफी संख्या में एकत्रित शिष्यों ने गुरु वंदना कर आरती उतारी। श्री सागरेश्वर धाम में विराजे शंकर- पार्वती की आराधना के साथ सभी देवी देवताओं की पूजा अर्चना की गई। ज्ञात हो कि सगरा मंदिर के पुजारी पंडित चन्द्र प्रकाश गौतम के द्वारा गुरु पूजन व धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराया गया।इस दौरान विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी भंडारा प्रसाद का वितरण किया गया। ज्ञात हो कि विशाल भंडारा का आयोजन प्रकाश गुप्ता के द्वारा किया गया था जिसमें गुरु शिष्यों के अलावा श्रद्धलुओं ने बढ़चढ़कर हिस्सा लेते हुए पुण्य लाभ अर्जित किया। गुरु पूर्णिमा के मौके पर समूचे जिले में गुरु पूजन के साथ मंदिरों व धार्मिक स्थलों में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान शिष्यों द्वारा संपादित किया गया।

खाद की किल्लत से नाराज किसानों ने पुष्पराजगढ़ में किया चक्काजाम, विधायक बैठे धरने पर

रीवा-अमरकंटक मुख्य मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध, 5 किमी तक दोनों ओर लगा जाम

विजय मत, अनूपपुर।

जिले के विकासखंड पुष्पराजगढ़ में लगातार बढ़ती खाद की किल्लत से परेशान किसानों का गुस्सा गुरुवार को फूट पड़ा। नाराज किसानों ने क्षेत्रीय विधायक फुंदेलाल सिंह मार्को के नेतृत्व में रीवा-अमरकंटक मुख्य मार्ग पर चक्काजाम कर दिया। सुबह से ही सैकड़ों की संख्या में किसान सड़क पर उतर आए और धरने पर बैठ गए, जिससे आवागमन पूरी तरह ठप हो गया। लगभग 5 किलोमीटर तक दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

धरने पर बैठे किसानों का कहना है कि सरकारी वितरण केंद्रों पर पर्ची तो काट दी जाती है लेकिन खाद नहीं दी जाती, जिससे बुवाई का समय निकलता जा रहा है और फसलें प्रभावित हो रही हैं।

व्यापारियों से खरीदना पड़ रहा महंगे दामों पर खाद

किसानों ने यह भी बताया कि स्थानीय व्यापारियों के पास पर्याप्त मात्रा में खाद मौजूद है, लेकिन उन्हें सरकारी केंद्रों से खाद नहीं दी जा रही। मजबूरी में उन्हें बाजार से मूल्य से कहीं अधिक दामों पर खाद खरीदना पड़ रहा है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। किसानों ने खाद वितरण व्यवस्था में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी होने का आरोप लगाया है और जांच की मांग की है।

विधायक मार्को डटे हैं किसानों के साथ

विधायक फुंदेलाल सिंह मार्को भी किसानों के साथ जमीन पर बैठकर धरना दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब तक किसानों को खाद की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं होती, आंदोलन जारी रहेगा। प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंचकर बार-बार आंदोलन समाप्त कराने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन किसान डीएपी खाद की तत्काल आपूर्ति की मांग पर अड़े हुए हैं।

प्रमुख मांगें:

डीएपी खाद की तत्काल उपलब्धता

पर्ची काटे जाने के बाद किसानों को खाद देना सुनिश्चित किया जाए

वितरण प्रणाली में पारदर्शिता लाई जाए

व्यापारियों के पास उपलब्ध खाद की जांच कर अनियमितता पर कार्रवाई हो

फिलहाल धरना स्थल पर प्रशासन और आंदोलनकारियों के बीच बातचीत जारी है। यदि जल्द समाधान नहीं निकला, तो आंदोलन और तेज होने की संभावना है।

फुदेलाल सिंह विधायक पुष्पराजगढ़

अमलेश्वर धाम में गुरु पूर्णिमा पावन अवसर पर श्रद्धालुओं का उमड़ा सैलाब

विजय मत, उमरिया।

उमरिया जिला एवं डिंडौरी जिले के सीमा में स्थित अमोल खोह, जो अमलेश्वर धाम आश्रम के नाम से जाना जाता है, पर गुरू पूर्णिमा के अवसर पर अमलेश्वर धाम में भगवान शंकर भगवान भोलेनाथ कैलाश गुफा में विराजमान दर्शन के लिए श्रद्धालुओं ने लक्ष्मण कुंड में स्नान कर शंकर भगवान के ज्योतिर्लिंग का दर्शन कर पूजा पाठ किया ,और कैलाश गुफा ,का परिक्रमा किया ,एवं हनुमान धारा ,गया जी, झरना का दर्शन किए। श्रद्धालुओं का आवा गवन बुधवार से शुरू हो गया था, जहां विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरु पूर्णिमा पावन अवसर पर गाजे -बाजे के साथ बड़े धूमधाम से मनाया गया। गुरु पूर्णिमा पावन अवसर पर अंतरराष्ट्रीय पंच दस जूना अखाड़ा के अंतर्राष्ट्रीय सचिव श्री श्री 108 श्री भगत गिरी (बच्चू महाराज) जी के संनिगध में कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रथम आरती पूजन महाराज जी के शिष्य संत रतन गिरी जी महाराज द्वारा पूजा अर्चना किया गया, और शंत महात्माओं किया गया, वही पधारे बांधवगढ़ विधानसभा क्षेत्र के लाड़ले विधायक शिवनारायण सिंह (लल्लू भैया) एवं समस्त परिवार द्वारा महाराज जी का,पूजा अर्चना किया,, गयातत्पश्चात क्रमशः आए हुए कई जिलों एवं क्षेत्रवासी श्रद्धालु गणों ने पूजा अर्चना की। पूजा अर्चना के बाद महराज जी ने आए हुए श्रद्धालुओं का अपने अमृत में वाणी से आशीर्वाद स्वरुप विश्व कल्याण हेतु ,जन कल्याण हितार्थ , गुरु पूर्णिमा पावन अवसर पर मंगल कामनाएं के साथ उद्बोधन दिए। अखंड मानस, कीर्तन, रामायण, का पाठ का आयोजन किया गया था,वह कार्यक्रम पूर्णाहुति के बाद हवन,यज्ञ कार्यक्रम संपन्न हुआ,, तत्पश्चात कन्या भोज के बाद ब्राह्मण भोज कराकर बड़े भाव के साथ श्रद्धालुओं ने भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया।

आर. सी. स्कूल में हुआ प्रतिनिधि मंडल का गठन,सभी पदाधिकारी निष्ठापूर्ण तरीके से करेंगे दायित्वों का निर्वहन

विजय मत, उमरिया।

गुरु पूर्णिमा के अत्यंत शुभ अवसर पर नगर के अग्रणी शिक्षण संस्थान आर.सी. हायर सेकेंडरी स्कूल उमरिया में नवगठित विद्यार्थी परिषद के अंतर्गत गुरु पूर्णिमा एवं छात्र-छात्राओं का अलंकरण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मिनाक्षी इंगले डिप्टी कलेक्टर उमरिया के मुख्य आतिथ्य एवं डॉक्टर नागेंद्र प्रताप सिंह एस.डी.ओ.पी., संतोष गुप्ता ,एवं राजेश शर्मा , उमरिया, संजय तिवारी सदस्य किशोर न्याय बोर्ड, वरिष्ठ पत्रकार दीपनारायण सोनी, कौशल विश्वकर्मा, राकेश टार्जन एवं हीरा सिंह चंदेल के विशेष आतिथ्य एवं गरिमामयी उपस्थिति में मां सरस्वती की प्रतिमा को धूप दीप एवं पुष्प अर्पित करके किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम मुख्य अतिथि ने क्रमशः हेड गर्ल अंशिका सिंह भदौरिया (कक्षा 12वीं विज्ञान संकाय)तथा हेड बॉय पुष्पेंद्र सोनी (कक्षा 12वीं वाणिज्य संकाय) को बैच लगाते हुए स्कूल लैग प्रदान किया।

तत्पश्चात नवनियुक्त हेड बॉय एवं हेड गर्ल ने अपने पदेन दायित्व के निष्ठा पूर्वक निर्वहन की शपथ ली तत्पश्चात क्रमशः विद्यालय के समस्त हाउस आस्था, संस्कार ,श्रद्धा एवं विश्वास के हाउस मास्टर ,सहायक हाउस मास्टर,हाउस कैप्टन, डिसिप्लिन कैप्टन ,कल्चरल कैप्टन , स्पोर्ट्स कैप्टन को आए हुए अतिथियों ने क्रमशः बैच लगाए तत्पश्चात समस्तकक्षाओ के कक्षा प्रतिनिधि को भी बैच लगाया गया। अंत में मुख्य अतिथि ने समस्त सदनों के पदाधिकारियों को आज प्रदान किये गए दायित्व का निर्वहन शिक्षण सत्र के दौरान सजकता एवं पूर्ण जिम्मेदारी से करेंगे।कार्यक्रम के दौरान संस्था प्रमुख श्री विश्वजीत पांडे जी ने नवनियुक्त पदाधिकारी को बधाई देते हुए दायित्व की गरिमा पूर्ण निर्वहन की ओर संकेत किया ।कार्यक्रम के समापन के पूर्व जिले के वरिष्ठ पत्रकार श्री राजेश शर्मा जी ने बच्चों को उनके उज्जवल भविष्य के लिए आशीर्वचन दिया तथा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु की महिमा को बताया। कार्यक्रम का समापन विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य श्री दीपक श्रीवास्तव ने उपस्थित अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को धन्यवाद प्रेषित किया।

हरियाली महोत्सव" के अंतर्गत पौधारोपण कार्यक्रम

उमरिया - पुलिस मुख्यालय भोपाल के निर्देशानुसार, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (प्रशिक्षण), राजा बाबू सिंह के कुशल मार्गदर्शन में, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय उमरिया पुलिस अधीक्षक मुकेश वैश्य के निर्देशन में, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय उमरिया की इकाई परिसर में हरियाली महोत्सव' के अंतर्गत पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर फलदार, छायादार (बांस, नीम, पीपल, बरगद, जामुन, आम, कटहल, कुल्लू, अमरूद, कदम, आंवला आदि) 3000 पौधों का लक्ष्य रखते हुये पहले दिन लगभग 1000 पौधे लगाये गये, जो निरंतर 03 दिवस तक पौधारोपण करते हुये 3000 पौधों के लक्ष्य को पूर्ण किया जावेगा।

निर्माणाधीन शासकीय सांदीपनी उमावि मॉडल करकेली का कलेक्टर ने किया निरीक्षण

विजय मत उमरिया। कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन ने जनपद पंचायत करकेली में 38 करोड़ की लागत से बन रहे नव निर्मित शासकीय संदीपनी उमावि मॉडल करकेली का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ऑफिस रूम, बायो लैब, फिजिक्स लैब , कंप्यूटर कक्ष, बैठक हॉल, एन सी सी कक्ष, शौचालय, ऑडिटोरियम, क्लास रूम, कॉमन रूम आदि का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान इंजीनियर एस राहुल ने बताया कि नवंबर 2025 तक निर्माण कार्य पूरा किया जाना है। वर्तमान में पुट्टी का कार्य किया जा रहा है। निर्माण एजेंसी पी डब्ल्यू डी है। निर्माण कार्य वर्ष 2023 में प्रारंभ हुआ है। ऑडिटोरियम के निरीक्षण के दौरान बताया गया कि यहाँ 250 बच्चों के बैठने की व्यवस्था है।कार्य की प्रगति धीमी पाए जाने पर कलेक्टर ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि शासकीय सांदीपनि उमावि मॉडल करकेली का निर्माण कार्य समय सीमा में पूरा किया जावे। इस अवसर पर जनपद पंचायत सीईओ हरनीत कौर कलसी ,जिला शिक्षा अधिकारी श्री आर एस मरावी, प्राचार्य शासकीय सांदीपनि उमावि मॉडल करकेली डॉ ए पी सिंह, डाइट के व्याख्याता सुशील मिश्रा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम

बच्चो के पहले शिक्षक उनके माता पिता होते है, जो उन्हें अच्छे संस्कार की शिक्षा देते है

गुरू पूर्णिमा के अवसर पर शासकीय सांदीपनी उमावि मॉडल विद्यालय में कार्यक्रम संपन्न

विजय मत, उमरिया।

हमारे जीवन में गुरू जनों का बहुत महत्व है। जिसके जीवन मे गुरू नही होते, उनका जीवन शुरू नही होता है। गुरूओ से प्राप्त मार्गदर्शन एवं शिक्षा के आधार पर ही हम अपना भविष्य बना सकते है। उक्त आशय के विचार कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन ने गुरू पूर्णिमा के अवसर पर शासकीय सांदीपनि उमावि मॉडल विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि बच्चो के पहले शिक्षक उनके माता पिता होते है, जो उन्हें अच्छे संस्कार की शिक्षा देते है, बच्चे व्दारा स्कूल में प्रवेश लेने पर उन्हे शिक्षकों व्दारा शिक्षा प्रदाय की जाती है, जो उन्हे आगें बढ़ने की प्रेरणा देती है। उन्होने कहा कि गुरू एक नारियल की तरह होते है जो बाहर से सख्त एवं अंदर से नरम होते है। गुरू जनों का सम्मान करें। गुरू जनों व्दारा दी जा रही शिक्षा को ग्रहण करें तथा उनकी डांट फटकार का बुरा नही माने, तभी हम

सफलता को प्राप्त कर सकते है।उन्होने बच्चों को गुरू पूर्णिमा की शुभकामनाएं देते हुए उच्च पदों पर पहुंचकर अपने माता पिता, स्कूल, जिले का नाम रोशन करने की बात कही। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आसुतोष अग्रवाल ने सांदीपनि , गुरू द्रोण आदि गुरू जनों व्दारा दी गई शिक्षा से उनके शिष्यो पर पड़े सकारात्मक प्रभावों को बताया। उन्होने कहा कि जीवन में आगें बढ़ने की प्रेरणा हमें गुरू जनों से ही मिलती है। गुरू के बिना जीवन अधूरा है। गुरू वह होते है जो अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाते है। आज का दिन गुरू जनों के सम्मान का दिन है। गुरू जनों का सम्मान करने पर मानव के अंदर अपने आप उर्जा का संचार बढ़ता है, जिसके उपरांत मानव कुछ भी करने में सक्षम बन जाता है। कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सीईओ जिला पंचायत अभय सिंह, जनपद पंचायत सीईओ हरनीत कौर कलसी, श्री दिलीप पांडेय, जिला शिक्षा अधिकारी श्री आर एस मरावी, विद्यालय के प्राचार्य ए पी सिंह, डाईट के व्याख्यता सुशील मिश्रा सहित स्कूली बच्चे उपस्थित रहे। कार्यक्र में भोपाल से आयोजित मुख्यमंत्री जी के मुख्य आतिथ्य में गुरू पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा एवं सुना गया। कार्यक्रम में सोहन चौधरी एवं स्कूली छात्राओ के व्दारा सरस्वती गीत एवं गुरू वंदना की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि सहित अन्य अतिथियों के व्दारा विद्यालय के प्राचार्य डा ए पी सिंह का शाल श्रीफल से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के

सांसद से मुक्तिधाम निर्माण की मांग

उमरिया। नगर पालिका परिषद अंतर्गत पंडित जवाहर लाल नेहरु वार्ड नंबर 11 मे मुक्तिधाम बनवाने शहडोल सांसद से मांग की गई है। पार्षद पूर्णिमा सुजीत सिंह ने शहडोल सांसद हिमाद्री सिंह को ज्ञापन देते हुए यह मांग की है। पार्षद ने कहा है वार्ड नंबर 11 खलेसर पत्ता गोदाम के पीछे मुक्तिधाम की जमीन जिसका खसरा नंबर 298/612 कलेक्टर द्वारा दिनांक 27/10/2022 को कॉलम नंबर 12 में मध्यप्रदेश शासन द्वारा 0.101 हे0 शमशान भूमि हेतु आरक्षित की गई है। वार्ड मे तथा वार्ड से लगे क्षेत्र मे नागरिकों को अंतिम संस्कार करने के लिए मुक्ति धाम कहीं नहीं है जिससे समस्त आमजन को समस्या का सामना करना पड़ता है।

न्यूज इन शॉर्ट

नगरीय निकायों के 9 पार्षद के उप निर्वाचन के परिणाम घोषित

भोपाल। 9 नगरीय निकायों में आज एक-एक पार्षद के उप निर्वाचन के परिणाम घोषित किये गये। घोषित परिणामों में 6 पार्षद भारतीय जनता पार्टी के और 3 पार्षद इंडियन नेशनल कांग्रेस के हैं। सचिव राज्य निर्वाचन आयोग अभिषेक सिंह ने जानकारी दी है कि भोपाल जिले के नगरीय निकाय बैरसिया के वार्ड 7 में भारतीय जनता पार्टी की सुशाइस्ता सुल्तान, नगरीय निकाय सिवनी के वार्ड 11 में भारतीय जनता पार्टी की सुनिधि, इंदौर जिले के नगरीय निकाय सांवेर के वार्ड 7 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की सुहसीना और नगरीय निकाय गौतमपुरा के वार्ड 15 में भारतीय जनता पार्टी के शंकरलाल, मंडला जिले के नगरीय निकाय बिछिया के वार्ड 13 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की सुराजकुमारी धुर्वे, शहडोल जिले के नगरीय निकाय खांड के वार्ड 8 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के शशिधर त्रिपाठी, छिंदवाड़ा जिले के नगरीय निकाय न्यूटन चिखली के वार्ड 4 में भारतीय जनता पार्टी की सुनिकिता बरखे और खरगोन जिले के नगरीय निकाय भीकनगाँव के वार्ड 5 में भारतीय जनता पार्टी की श्रीमती कमलेश कौशल को विजेता घोषित किया गया है। पन्ना जिले के नगरीय निकाय ककरहटी के वार्ड 13 में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी हीरालाल आदिवासी निर्विरोध निर्वाचित घोषित किये गये हैं।

पेट्रोल-डीजल पम्पों की जांच दल ने किया विभिन्न पेट्रोल पम्पों का निरीक्षण

भोपाल। कलेक्टर भोपाल कौशलेंद्र विक्रम सिंह द्वारा गठित जांच दल द्वारा चन्द्रभान सिंह जादौन, जिला आपूर्ति नियंत्रक भोपाल के मार्गदर्शन में जिले में मोटर स्पिरिट और उच्च वेग डीजल प्रदाय तथा वितरण का विनियमन और अनाचार निवारण आदेश 2005 के प्रावधानों का पालन सुनिश्चित कराने के संबंध में जांच की गई। यह जांच राजस्व विभाग, खाद्य विभाग और नापतौल विभाग के अधिकारियों द्वारा की गई। जांच दल में एस.पी. पंडोले, नायब तहसीलदार भोपाल जगदीश भावसार, निरीक्षक नापतौल, अशोक सत्यार्थी, सुकुसुम अहिरवार, संदीप भार्गव, सहायक आपूर्ति अधिकारी तथा सुनिल वर्मा, पुष्पराज पाटिल, श्रीमती वसुंधरा पेन्द्रो एवं मयंक द्विवेदी, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी शामिल रहे। गुरुवार को जांच दल द्वारा बैरागढ़ क्षेत्र स्थित मेसर्स जनता सेल्स सर्विस, मेसर्स पंजाब सेल्स एंड सर्विस, बाहुबली सेल्स एंड सर्विस; लालघाटी स्थित मेसर्स स्मार्ट सिटी फ्यूल; नादरा बस स्टैंड हमीदिया रोड स्थित मेसर्स सलुजा सेल्स सर्विस; तथा नीलबड़ क्षेत्र स्थित मेसर्स नायरा एनर्जी शुक्ला पेट्रोलियम, मेसर्स एस.पी. पेट्रोलियम और मेसर्स ए.एम.डी. पेट्रोलियम की जांच शासन द्वारा उल्लेखित तथ्यों के आधार पर की गई। जिले के समस्त पेट्रोल एवं डीजल पम्पों की जांच राजस्व विभाग, खाद्य विभाग, नापतौल विभाग एवं ऑयल कम्पनी के सेल्स ऑफिसर्स के साथ निरंतर जारी रहेगी।

भोपाल में आज होगी राष्ट्रीय आयुष मिशन संबंधी नीतिगत दस्तावेज के लिए अंतर्राज्यीय बैठक

भोपाल। राष्ट्रीय विभागीय सम्मेलन आयुष मंत्रालय, भारत सरकार अंतर्गत राष्ट्रीय आयुष मिशन संबंधी नीतिगत दस्तावेज के लिए अंतर्राज्यीय बैठक, मध्यप्रदेश के नेतृत्व में 11 जुलाई शुक्रवार को भोपाल में आयोजित होगी। बैठक में केंद्रीय आयुष मंत्रालय के अधिकारियों के साथ संबंधित राज्य के आयुष विभाग के उच्च अधिकारी सहभागिता करेंगे। आयुष चिकित्सा को चिकित्सा की मुख्य धारा में लाकर आमजन को उच्च स्तरीय आयुष चिकित्सा प्रदान करना तथा आयुष विभाग की अधोसंरचना एवं उच्च गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन उपलब्ध कराना इस बैठक का उद्देश्य है। राष्ट्रीय आयुष मिशन और राज्यों में क्षमता निर्माण National AYUSH Mission and Capacity Building in State के उपविषयों का चयन किया जाकर उपविषय संगठनात्मक संरचना की समीक्षा मानव संसाधन सुदृढ़ीकरण एवं क्षमता निर्माण सहित Organizational Structure Review, including HR Strengthening & Capacity Building के नोडल राज्य मध्यप्रदेश एवं सिक्किम हैं। वर्किंग ग्रुप के अन्य सदस्य राज्य बिहार, दिल्ली, गोवा एवं नागालैण्ड हैं। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में 17 अप्रैल 2025 को आयोजित बैठक में नीति आयोग द्वारा राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में विचार विमर्श के लिए आगामी 6 शिखर सम्मेलन के 6 विषय का चयन किया गया है। चयनित विषयों में से एक विषय के रूप में राष्ट्रीय आयुष मिशन और राज्यों में क्षमता निर्माण National AYUSH Mission and Capacity Building in State का चयन किया गया है।

मध्य प्रदेश के 14 जिलों में अति भारी बारिश का अलर्ट

सीहोर और सागर में दो कार बही, नर्मदा खतरे के निशान से ऊपर

विजय मत, भोपाल

मध्यप्रदेश में मानसूनी बारिश से मंडला, नरसिंहपुर, उमरिया, शिवपुरी, जबलपुर, रीवा, शहडोल-सागर के साथ ग्वालियर संभाग के कई जिलों में बाढ़ के हालात हैं। आज गुरुवार को 14 जिलों में अति भारी और 22 जिलों में भारी बारिश होने का अलर्ट है। सागर और सीहोर में दो कारें नदी-नाले में बह गईं। ग्वालियर और रीवा जिले में 9 घंटे में औसत ढाई इंच बारिश हुई।

प्रदेश के सभी जिलों में पिछले 24 घंटे के दौरान आंधी और बारिश का दौर रहा। सबसे ज्यादा बारिश दमोह में 4.1 इंच हो गई। शिवपुरी में 3 इंच, नौगांव-सतना में 1.8 इंच, टीकमगढ़ में डेढ़ इंच, सागर में 1.1 इंच और रायसेन में 1 इंच बारिश दर्ज की गई। भोपाल में रात में बारिश हुई, जो आधा इंच से ज्यादा रही।

ग्वालियर-रीवा में 9 घंटे में ढाई इंच पानी गिरा

ग्वालियर और रीवा जिले में गुरुवार को 9 घंटे में औसत ढाई इंच पानी गिर गया। यहां मौसम विभाग ने भारी बारिश दर्ज की गई। दतिया में पौन इंच, टीकमगढ़, सतना और छतरपुर के खजुराहो में आधा इंच पानी गिरा। सीधी, गुना, सागर, उमरिया, दतिया, मऊगंज, दमोह, सिवनी, मऊगंज में भी बारिश का दौर जारी रहा।

मैहर में सड़कों पर भरा पानी

मैहर गुरुवार को दोपहर 2 बजे के बाद तेज बारिश होने लगी। जिससे रेलवे स्टेशन रोड पर पानी भर गया।

ग्वालियर: पॉश कॉलानियों के घरों में घुसा पानी

ग्वालियर में गुरुवार को आधे घंटे की तेज बारिश का पानी पॉश कॉलोनियों में भी पानी भर गया। निचली बस्तियों के घरों में तो कमर तक पानी भर गया। सड़कों पर वाहनों के पहिए पानी में डूबते नजर आए। शताब्दीपुरम, आदित्यपुरम, डीडी नगर, लधेड़ी, श्रीनगर कॉलोनी, नदी पार टाल, नारायण विहार और सिरोल रोड की निचली बस्तियों में घुटनों से लेकर कमर तक पानी भर गया था। रॉकी पुल, न्यू जीवाजी नगर, सिटी सेंटर सहित शहर की अन्य कॉलोनियों और गली-मोहल्लों में भी जलभराव हो गया था। लोगों का कहना है कि बारिश होते ही गली, मोहल्ले और कॉलोनियों में हर बार ऐसे ही हालात हो जाते हैं। इससे पहले बुधवार को सबसे खराब स्थिति लक्ष्मीगंज स्थित जागृति नगर की रही। लोग अपने-अपने घरों से पानी निकालने में जुटे थे।

सिवनी मालवा में बारिश से जलभराव

नर्मदापुरम की सिवनी मालवा तहसील में बुधवार- गुरुवार की दरमियानी रात करीब 12 बजे से 1:30 बजे तक तेज बारिश हुई। इससे कुछ ही देर में शहर के निचले इलाकों समेत ग्रामीण अंचलों में जलभराव की स्थिति बन गई। इलाके की अधिकांश नदियां और नाले उफान पर आने से कई गांवों का संपर्क मुख्य मार्गों से कट गया है।

सीहोर के सतकुंडा झरने में बहते युवक का वीडियो

सीहोर में बुदनी के सतकुंडा झरने में नहाते समय एक युवक के बहने का वीडियो सामने आया है। युवक बरसाती झरने में बहता हुआ दिखाई दे रहा है। उसे बचाने के लिए एक अन्य व्यक्ति पीछे-पीछे दौड़ लगा रहा है। पानी में बह रहा व्यक्ति चट्टान से टकराने के बाद रुक गया। इससे बड़ा हादसा टल गया। वीडियो कब का है, इसका पता नहीं चल पाया है।

सीहोर: नाले मे कार बही, कार सवार लोग सुरक्षित

सीहोर जिले की रेहटी तहसील में गुरुवार को एक कार धामंडा नाले में बह गई। बाढ़ का पानी पुल के ऊपर से बह रहा था। कार में गोपालपुर निवासी आकाश (30) और राला निवासी नरेंद्र (35) सवार थे। दोनों बमुश्किल बाहर निकल सके। अब दोनों सुरक्षित हैं। कार नसरुल्लागंज तहसील क्षेत्र की बताई जा रही है।

मंडला में 23 दिन में 61% बारिश, 7 की मौत, 210 गांवों में भरा पानी

मंडला जिले में 18 जून से अब तक 810 मिमी यानी 31.87 इंच बारिश हो चुकी है। यह वार्षिक औसत 1326.2 मिमी (52.21 इंच) का 61 प्रतिशत है। बाढ़ की चपेट में आए 210 गांवों में जनजीवन अस्त-व्यस्त है। नदी-नालों को पार करते समय बहे 9 में से 7 लोगों की मौत हो चुकी है।

उफनते नाले को पार करने की कोशिश, पुलिया से नीचे लटकी बस

दमोह जिले में ड्राइवर ने उफनते नाले से बस को पार कराने की कोशिश की। बस अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे लटक गई। उसका आधा हिस्सा नाले और आधा पुलिया पर फंस गया। मामला तेजगढ़ थाना क्षेत्र के लकलका झापन रोड पर बुधवार रात का है।

ये गांव सबसे ज्यादा प्रभावित

बिछिया, बीजाडांडी, नारायणगंज, निवास और मंडला क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। बिछिया के अंजनिया, माधोपुर, मरारटोला, करियागांव, जगन्नाथ, भलवारा और बीजाडांडी के बरौची, पीपलधर, तुमती, विजयपुर गांवों में बड़ा नुकसान हुआ है।

दतिया में नाले में बहा ऑटोरिक्शा, ड्राइवर को बचाया

दतिया में रिछरा फाटक इलाके का नाला सुबह हुई बारिश से उफान पर आ गया। पानी के बहाव में ऑटोरिक्शा फंस गया। स्थानीय लोगों ने मदद कर ड्राइवर को बाहर निकाला।

उज्जैन में 36 इंच बारिश का रिकॉर्ड

उज्जैन में पूरे जुलाई महीने में 36 इंच बारिश का ओवरऑल रिकॉर्ड है। इतनी बारिश साल 2015 में हुई थी। 2023 में 21 इंच से ज्यादा पानी गिर गया था। 24 घंटे में सबसे ज्यादा बारिश 19 जुलाई 2015 को 12.55 इंच हुई थी। उज्जैन में जुलाई की औसत बारिश 13 इंच है। महीने में 12 दिन पानी बरसता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जानकारी प्राप्त कर दिए निर्देश

नवीन शासकीय भर्तियों के कार्य की सतत् समीक्षा करें, वरिष्ठ अधिकारी: मोहन यादव

विजय मत, भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विभिन्न शासकीय विभागों में रिक्त पदों को भरने का कार्य तेजी से पूर्ण किया जाए। रिक्त पदों पर सतत् रूप से नियुक्तियों का कार्य होने से विभागों के नियमित कार्यों में भी गति आ रही है। साथ ही वर्षों पश्चात पदोन्नतियों की प्रक्रिया प्रारंभ किए जाने से भी बड़ी संख्या में पदों पर नियुक्ति का कार्य आसान हो रहा है। वरिष्ठ अधिकारी नवीन शासकीय भर्तियों के कार्य की सतत् समीक्षा करें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरूवार को समत्व भवन, मुख्यमंत्री निवास में हुई एक बैठक में विभिन्न शासकीय विभागों में रिक्त पदों पर भर्ती के संबंध में जानकारी प्राप्त कर निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विभागों में नियुक्तियों के कार्य की निरंतर समीक्षा भी की जाए। मुख्य सचिव स्तर और अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा विभागों को समय सीमा में कार्यवाही के लिए निर्देशित किया गया है। इस क्रम में विभागों से पालन प्रतिवेदन प्राप्त किया जाए। इस कार्य को आवश्यक समन्वय और सर्वोच्च प्राथमिकता से पूर्ण किया जाए। बैठक में अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन विभाग संजय कुमार शुक्ल ने लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन मंडल और अन्य स्तर से नवीन शासकीय भर्तियों की प्रगति से अवगत करवाया।

बैठक में मुख्य सचिव अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय नीरज मंडलोई, सचिव मुख्यमंत्री सिबि चक्रवर्ती, आयुक्त जनसम्पर्क डॉ. सुदाम खाड़े एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

जनजातीय अंचलों को मिली सौगात: 66 नवीन आंगनवाड़ी केन्द्रों की स्वीकृति

भोपाल। प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में बाल विकास एवं पोषण सेवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में राज्य सरकार द्वारा महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान (DA-JGUA) के अंतर्गत वर्ष 2025-26 में 66 नवीन आंगनवाड़ी केन्द्रों की स्थापना और भवन निर्माण को स्वीकृति प्रदान की गई है। यह स्वीकृति केन्द्र सरकार द्वारा अनुमोदित अभियान के अंतर्गत प्राप्त हुई है। स्वीकृत नवीन आंगनवाड़ी केन्द्रों के संचालन के लिए 66 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता (मानसेवी), 66 आंगनवाड़ी सहायिका (मानसेवी) तथा 02 पर्यवेक्षक (नियमित वेतनमान) के पद स्वीकृत किए गए हैं। 12 लाख रूपये प्रति भवन की लागत निर्धारित की गई है, जिसकी शत-प्रतिशत राशि केन्द्र सरकार द्वारा वहन की जाएगी। उल्लेखनीय है कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत प्रदेश के बड़वानी जिले में 25, देवास में 9, खरगौन और रतलाम में 7-7, धार में 5, पन्ना और रीवा में 3-3, श्योपुर और सिंगरौली में 2-2 तथा बैतूल, गुना और नर्मदापुरम में एक-एक आंगनवाड़ी केन्द्र की स्वीकृति मिली है।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में 194 वीं राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की हुई बैठक

- पीएम स्वनिधि योजना के लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता से करें निराकरण

विजय मत, भोपाल

मुख्य सचिव अनुराग जैन की अध्यक्षता में मंत्रालय में 194 वीं राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की बैठक हुई। बैठक में 192 एवं 193 वीं बैठक का पालन प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के बैंक बिजनिस, क्रेडिट प्लान, प्रदेश में नवीन बैंक शाखाओं की अद्यतन स्थिति, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, अटल पेंशन योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम स्वनिधि, पीएम विश्वकर्मा स्कीम, के अलावा कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन एवं अन्य विषयों पर चर्चा की गयी।

मुख्य सचिव अनुराग जैन ने पीएम स्वनिधि योजना के 19196 प्रकरणों के लंबित रहने पर नाराजगी व्यक्त की एवं संबंधित बैंक प्रबंधकों को नोटिस देने के निर्देश दिये। साथ ही सभी लंबित प्रकरणों का निराकरण 15 दिन में करने के लिए निर्देशित किया। स्वामित्व योजना का लाभ हितग्राहियों को देने के निर्देश दिये गये। मुख्य सचिव ने विभिन्न योजनाओं में इंश्योरंस क्लेम की जानकारी देने वित्तीय जागरूकता अभियान चलाने के लिए वित्त विभाग को निर्देशित किया।

एनसीडीएफआई द्वारा भारतीय सेना के साथ सहयोग के 40 वर्ष होने पर एमपीसीडीएफ भोपाल को प्रदान किया गया प्रशंसा पत्र

विजय मत, भोपाल

एनसीडीएफआई द्वारा भारतीय सेना के साथ सहयोग के 40 वर्ष होने पर वार्षिक समीक्षा बैठक नई दिल्ली में आयोजित की गई। कार्यक्रम में एनसीडीएफआई एव एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ.मीनेश शाह, एनसीडीएफआई के प्रबंध संचालक श्रीनिवास सज्जा, डीजीएसटी भारतीय सेना, भारतवर्ष से सभी कॉपरेटिव स्टेट फेडरेशन के एमडी तथा एनसीडीएफआई व भारतीय सेना के अधिकारीगण मौजूद रहे।

इस अवसर पर एमपी स्टेट कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन (एमपीसीडीएफ) द्वारा भारतीय सेना को सांची दूध एवं विभिन्न दूध उत्पाद प्रदाय कर सहयोग करने हेतु प्रबंध संचालक डॉ संजय गोवाणी को एनसीडीएफआई चेयरमैन डॉ. मीनेश शाह की उपस्थिति में प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया।

सांची दूध उत्पादों की लगाई प्रदर्शनी–इस कार्यक्रम में सांची ब्राण्ड के प्रमुख दूध उत्पादों की डमी पैक की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका अवलोकन एनसीडीएफआई एव एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ.मीनेश शाह और भारतीय सेना अधिकारियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर भारतीय सेना के अधिकारियों द्वारा मध्यप्रदेश में भारतीय सेना यूनिट्स को सांची दूध और दूध उत्पादों की सप्लाई को संतोषजनक बताया।

आर्शीवाद

विजय मत, भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने गुरूवार को गुरू पूर्णिमा के अवसर पर बैतूल में प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं पूज्य गुरूजी पंडित डॉ. कांत दीक्षित के निवास पहुंचकर उनका सम्मान किया एवं आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात खंजनपुर स्थित धूनी वाले दादाजी की पावन कुटी में पूजन-अर्चन कर प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि की कामना की। इस दौरान जिला अध्यक्ष सुधाकर पंवार एवं पूर्व जिला अध्यक्ष आदित्य शुक्ला उपस्थित रहे।

विजय मत एंकर अभिनव पहल

उचित मूल्य दुकानों में उपभोक्ताओं के लिये राशन के साथ पोषण भी

विजय मत, भोपाल

उपभोक्ताओं के हित में और उचित मूल्य दुकानों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए शासन द्वारा नवाचार किया जा रहा है। अब शासकीय उचित मूल्य दुकानों से उपभोक्ताओं को राशन के साथ ही गुणवत्तापूर्ण दुग्ध उत्पाद और अन्य पोषण सामग्रियाँ भी उचित मूल्य पर देने की व्यवस्था शुरू की गई हैं। इन दुकानों से जैविक उत्पाद भी उपलब्ध कराये जाने का भी लक्ष्य है। योजना में इंदौर जिले में 30 चिन्हित उचित मूल्य दुकानों पर जन पोषण केन्द्र की स्थापना की गई है। इसी दिशा में आगे कदम बढ़ाते हुये जिला उज्जैन एवं सागर में 15-15 उचित मूल्य दुकानों को जन पोषण केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिये दुकानों का चयन कर लिया गया है। इस संबंध में

भारत सरकार द्वारा चयनित विक्रेताओं को प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि सरकारी राशन की दुकानों को पोषण केंद्रों में बदलने की यह एक अभिनव पहल है। इसका उद्देश्य लोगों को पोषण से भरपूर खाद्य पदार्थ मुहैया कराना है।

उपभोक्ताओं ने भी की सराहना–स्थानीय उपभोक्ताओं द्वारा उचित मूल्य दुकान पर उक्त सामग्री की उपलब्धता पर प्रसन्नता जाहिर की जा रही है। उनका कहना है कि राशन के साथ ही अन्य सामग्री भी एक ही जगह पर मिलने से अब अन्यत्र नहीं जाना पड़ेगा। उचित मूल्य की दुकानों पर जन पोषण केन्द्र शुरू हो जाने के बाद उपभोक्ताओं को तो लाभ होगा ही, इसके साथ ही राशन डीलरों की आय में भी वृद्धि होगी और लोगों को पोषण से भरपूर खाद्य पदार्थ मिलेंगे। जन पोषण केंद्रों में पोषण से जुड़े उत्पादों का भंडारण होगा। इन केंद्रों में राशन डीलर्स को आसान लोन की सुविधा भी मिलेगी। साथ ही केंद्रों में डिजिटल टूल्स और सहायता प्रणालियों का इस्तेमाल किया जाएगा। कॉमन सर्विस सेंटर, बैंकिंग कॉरसपोंडेंस बनाने की कार्यवाही भी जन पोषण केन्द्र पर की जा रही है। जन पोषण केन्द्रों में पोषण सघन वस्तुओं जैसे कि बाजरा, दालें, खाद्य तेल, सोयाबीन और डेयरी उत्पाद का भण्डारण कर उचित मूल्य पर देने की व्यवस्था शुरू की जा रही है।

उचित मूल्य दुकानों के डीलर्स को राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। प्रोजेक्ट के प्रबंधन एवं निगरानी के लिये एक राज्य स्तरीय प्रबंधन समिति का गठन किया गया है।

मध्यप्रदेश में डीएपी और उर्वरकों की भयावह कमी, अमानक खाद और नकली बीजों से बर्बाद हो रही किसानों की फसलें-मोहन सरकार की चुप्पी चिंताजनक: मुकेश नायक

विजय मत, भोपाल

मध्यप्रदेश में खरीफ सीजन की शुरुआत एक त्रासदी बन चुकी है। जहां एक ओर किसान समय पर बुवाई के लिए डीएपी और खाद के लिए तरस रहे हैं, वहीं दूसरी ओर उन्हें अमानक खाद, बीज और कीटनाशक देकर उनके भविष्य को अंधकार में झोंका जा रहा है। प्रदेश कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक ने कहा कि यह केवल कुप्रबंधन नहीं, बल्कि किसानों के साथ खुला धोखा है। मोहन यादव सरकार और केंद्र की मोदी सरकार दोनों ने मिलकर किसानों को झूठ, लापरवाही और बाजारू तंत्र के हवाले कर दिया है। जब प्रदेशभर से खाद की किल्लत की रिपोर्ट्स रोज़ आ रही हैं, तो मुख्यमंत्री मोहन यादव चुप क्यों हैं क्या वे कृषि मंत्री से रिपोर्ट तक नहीं मांग रहे या फिर जानबूझकर

आंखें मूंद रखी हैं

तथ्यों की जुबानी खाद और बीज संकट की सच्चाई

1. मध्यप्रदेश को खरीफ 2025 के लिए जून तक 6.5 लाख मीट्रिक टन डीएपी की आवश्यकता थी, लेकिन केवल 4.1 लाख मीट्रिक टन की आपूर्ति हुई। 28 प्रतिशत की सीधी कमी।
2. प्रदेश की 65 प्रतिशत खेती खरीफ पर निर्भर है और इसमें सबसे ज़्यादा ज़रूरत डीएपी और यूरिया की होती है। खाद नहीं मिलने से बुवाई प्रभावित हो रही है।
3. हरदा, नर्मदापुरम, दमोह, छतरपुर, विदिशा, रायसेन, सीहोर, रीवा, और सागर जिलों में किसान 10 से 12 घंटे लाइन में खड़े रहकर भी खाली हाथ लौट रहे हैं।
4. सरकारी समितियों में खाद नहीं, लेकिन ब्लैक मार्केट में 1700-2000 प्रति बोरी डीएपी धड़ल्ले से बिक रही है। जबकि तय दर 1350 है।
5. कई स्थानों पर तो पुलिस की मौजूदगी में ही यह कालाबाज़ारी हो रही है, जिससे खाद माफियाओं और सरकार के गठजोड़ की बू आती है। अब अमानक खाद और नकली बीज से बरबाद हो रहा किसान!

नायक ने खुलासा किया कि प्रदेश के लाखों किसान अब सिर्फ खाद की कमी से नहीं, बल्कि अमानक खाद, नकली बीज और कीटनाशकों के कारण फसल बर्बादी के शिकार हो रहे हैं। पिछले 2 महीनों में प्रदेशभर से नकली या अमानक बीजों से अंकुरण विफल होने की 1,100 से अधिक शिकायतें आई हैं।

यूज इन शॉर्ट

नगर परिषद खांड में कांग्रेस की जीत पर कार्यकर्ताओं का उत्साह

ब्यौहारी। शहडोल जिले की नगर परिषद खांड बाणसागर में चल रहे उपचुनाव के परिणाम 10 जून दिन गुरुवार को आ गये व कांग्रेस पार्टी के लिए यह दिन बढ़िया रहा जहां कांग्रेस पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी शशिधर त्रिपाठी (बाबू उर्मलिया) ने भाजपा के अधिकृत प्रत्याशी के विरुद्ध शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की व नगर परिषद में कांग्रेस की एक सीट पर बढ़ोत्तरी हुई चुनाव आयोग द्वारा जारी चुनावी प्रक्रिया तिथि से ही इस चुनाव को अपने पक्ष में करने को लेकर सक्रिय कांग्रेस ने मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी भोपाल के मार्गदर्शन में जिला कांग्रेस शहडोल के अध्यक्ष सुभाष गुप्ता व प्रदेश सचिव अजय अवस्थी के नेतृत्व में ब्लाक कांग्रेस कमेटी ब्योहारी के अध्यक्ष विनोद तामकार को इस सीट के लिए प्रत्याशी चयन का प्रभारी नियुक्त किया गया था इस सीट पर प्रभार मिलते ही सक्रिय हुए ब्लाक अध्यक्ष विनोद तामकार ने बाणसागर के कांग्रेस जनों को एकजुट कर जिस प्रकार सर्वसम्मति से बाबू उर्मलिया की टिकट पर मुहर लगाई उसी दिन से एक एक कांग्रेस कार्यकर्ता आपसी मनमुटाव भूलकर भाजपा की दमनकारी नीति के विरुद्ध अडिग हो गया और इसी एकजुटता का प्रमाण है कि नगर परिषद खांड में कांग्रेस प्रत्याशी ने जीत दर्ज की जीत के पश्चात ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष विनोद तामकार ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह जीत जनता की सजगता और भाजपा के खोखले वादों के विरुद्ध है इस जीत से यह साबित होता है कि अगर कांग्रेस पार्टी का एक एक कार्यकर्ता एकजुट होकर कार्य करे तो परिणाम सदैव हमारे पक्ष में होगे इस चुनाव में हमारे बाणसागर के कांग्रेस जनों ने जिस प्रकार से एकजुटता दिखाई व काबिले तारीफ है मैं बाणसागर के एक एक कांग्रेस कार्यकर्ताओं व वरिष्ठ नेताओं का आभार व्यक्त करता हूं।

जिला स्तरीय कार्यबल की बैठक सम्पन्न

शहडोल। बेटी बचाओए बेटी पढाओ योजनातंर्गत जिला स्तरीय कार्यबल की बैठक कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में सदस्य महिला बाल संरक्षण आयोग श्रीमती मेघा पवार एवं कलेक्टर डॉ केदार सिंह की उपस्थिति में आयोजित की गई। बैठक में सदस्य महिला बाल संरक्षण आयोग श्रीमती मेघा पवार ने कहा कि बेटियों की उत्तरजीविता, संरक्षण एवं शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए समन्वित प्रयास किये जाए। उन्होंने कहा कि बेटियो के सशक्तिकरण के लिए बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना शुरू की गई हैए बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना का उददेश्य लिंग के आधार पर लिंग चयनात्मक उन्मूलन को रोकना, बेटियो की उत्तरजीविता एवं संरक्षण सुनिश्चित करना बेटियो की शिक्षा एवं भागीदारी सुनिश्चित करना है। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीवान जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग अखिलेष मिश्राए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश मिश्रा, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग आनंद राय सिंहा, अध्यक्ष सीडब्ल्यूसी श्रीमती कल्याणी बाजपेईए सीडब्ल्यूसी सदस्य अभिषेक चौकसे, पूर्णिमा चौधरी सहित संबंधित विभाग के अधिकारी एवं जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति के अन्य सदस्य उपस्थित थें।

कलेक्टर ने स्वीकृत की आर्थिक सहायता राशि

शहडोल। कलेक्टर डॉण् केदार सिंह ने मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान मद से बकहो बुढार निवासी श्री अनिल साहू को उपचार हेतु 50 हजार रूपये की आर्थिक सहायता राशि स्वीकृत की है।

विधायक ने ब्यौहारी में आजीविका भवन का फीता काटकर किया शुभारंभ

शहडोल। विधायक ब्यौहारी शरद कोल ने जनपद पंचायत ब्यौहारी में आजीविका भवन का फीता काटकर शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि यह भवन स्थानीय महिलाओं और स्व.सहायता समूहों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दूर.दराज क्षेत्रों से आने वाली स्व सहायता समूह की महिलाओं को सुविधा युक्त भवन मिल गया है। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व नरेंद्र सिंह धुर्वे, नगर परिषद अध्यक्ष कृष्ण गुप्ता, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती आकांक्षी सिंह सहित अन्य अधिकारी एवं स्व.सहायता समूह की महिलाए उपस्थित थी।

ट्रैक्टर मय रेत लोड जप्त

शहडोल। पुलिस अधीक्षक शहडोल द्वारा अवैध गतिविधियों मे संलिप्त व्यक्तियों के विरूद्ध लगातार कार्यवाही का निर्देश अधीनस्थ स्टाफको दिया जा रहा है उसी क्रम मे शहडोल पुलिस को अवैध रेत उत्खनन एवं परिवहन करने वाले ट्रेक्टर मय रेत लोड ट्राली के जप्त की गई। थाना जयसिंहनगर में दिनांक 09.07.25 को रात्रि गस्त के दौरान सूचना मिली कि एक ट्रैक्टर से अवैध रूप से रेत लोड कर ग्राम मोहनी ढोढर तरफसे जयसिंहनगर तरफआ रहा है। जिस पर पुलिस द्वारा तस्दीक हेतु रवाना हुए बंधा बाजार के पास उक्त ट्रैक्टर मय रेत लोड आते दिखा।

जिले के शैक्षणिक संस्थानो में उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया गुरू पूर्णिमा

श्री गुरू पूर्णिमा महोत्सव पर जगह-जगह हुए कार्यक्रम

विजय मत, शहडोल।

श्री गुरू पूर्णिमा महोत्सव पर 10 जुलाई गुरूवार को जगह-जगह कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शहडोल जिला मुख्यालय में स्थित श्रीराम मंदिर में गुरू पूर्णिमा का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने गुरू भगवान की पूजा अर्चना की। वहीं दूसरी ओर सिंहपुर रिसोर्ट में द्विवेदी परिवार द्वारा एक भव्य आयोजन किया गया जिसमें अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद स्वामी श्री संतशरण जू महाराज की उपस्थित में श्री गुरूपूर्णिमा महोत्सव पर हजारों श्रद्धालुओं ने गुरूदेव भगवान की पूजा अर्चना की।

मध्यप्रदेश शासन के शिक्षा विभाग भोपाल के निर्देशानुसार शहडोल जिले के विभिन्न शासकीयए अशासकीय एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में गुरू पूर्णिमा उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया।

सांदीपनि स्कूल मउ में हुआ कार्यक्रम

सांदीपनि स्कूल मउ में आयोजित गुरूजन सम्मान कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य ने कहा कि गुरू विद्यार्थी को शिक्षा के माध्यम से अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते है। शिक्षा के साथ.साथ संस्कार भी विद्यालयों में सिखाए जाते है। सीएम राइज स्कूल का नाम संदीपनी विद्यालय के नाम से जाने जाएंगे। महर्षि संदीपनी ने गुरू शिष्य परंपरा के द्धैतक थे। उनके गुरूकुल में 64 कला 14 विद्या तथा वेद पुराण की षिक्षा दी जाती थी। भगवान श्री कृष्णए बलराम तथा सुदामा ने भी यहां से शिक्षा प्राप्त की थी।
इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षकों का स्थानीय समुदाय एवं विद्यार्थियो द्वारा सम्मान किया गया।

हायर सेकेण्डरी बाणसागर में शिक्षकों का सम्मान

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बाणसागर में

आयोजित गुरू पूर्णिमा के अवसर पर शिक्षको का सम्मान किया गया। विद्यालय के प्राचार्य ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थियो के हित में अनेको योजनाएं संचालित की जा रही है। विद्यार्थियो को स्कूल शुरू होते ही निःशुल्क पाठय पुस्तक उपलब्ध कराना‌ए कक्षा 6 एवं कक्षा 9 के विद्यार्थियो को स्कूल आने जाने के लिए साइकिलए गणवेशए स्कूल में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को स्कूटी की सुविधा दी जा रही है। आपने विद्यार्थियो से कहा कि मन लगाकर पढ़े आगे ब?ए प्रदेश और देश में अपने विद्यालय का नाम रोशन करे। कार्यक्रम में षिक्षको एवं विद्यार्थियो तथा उपस्थित गणमान्य जनो ने भी गुरू की महत्वा पर प्रकाश डाला।

विद्यार्थियो को साइकिले वितरित की गई

गोहपारू ब्लॉक में गुरु पुर्णिमा के अवसर पर सांदीपनि विद्यालय गोहपारू के छात्रों को जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती राम बाई सिंह एवं जनपद पंचायत उपाध्यक्ष श्री सुधीर सिंह की उपस्थिति में साइकिल वितरण किया गया। इसी प्रकार ब्यौहारी विकासखंड में भी साइकिल का वितरण किया गया।

महर्षि विद्या मंदिर में गुरू पूर्णिमा महोत्सव

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर महर्षि विद्या मंदिर शहडोल में गुरु पूर्णिमा महोत्सव पूरे उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गुरु पूजन एवं रुद्राभिषेक संपन्न किया गया।

पंडित शंभूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, में गुरु पूर्णिमा महोत्सव

पंडित शंभूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल के मुख्य तथा उप परिसर में आज गुरु पूर्णिमा पर्व को उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। भारतीय परंपरा में गुरु की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए इस अवसर पर मुख्यमंत्री माननीय डॉ. मोहन यादव जी के उद्बोधन का सीधा प्रसारण दोनों परिसरों में किया गया, जिसे विद्यार्थियों, प्राध्यापकों और अधिकारियों ने श्रद्धापूर्वक श्रवण किया।
कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. रामशंकर ने की। उन्होंने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा, ÷गुरु पूर्णिमा केवल एक पर्व नहीं, यह आत्मा के आलोक से आत्मा को जोड़ने का पर्व है। विद्यार्थी अपने भीतर के अंधकार को मिटाकर ज्ञान के आलोक से आलोकित हों – यही गुरुतत्व का उद्देश्य होता है। गुरु तत्व की विशद व्याख्या करते हुए कहा कि गुरु भौतिक शरीर नहीं गुरु तत्व के रूप में समस्त संसार में व्याप्त है जो हमारे मानस से जुड़ा है सिर्फ हमें पुष्ट होना है और गुरु तत्व से जुड़ना है।
इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. आशीष तिवारी, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. प्रमोद पाण्डेय, डॉ. विनोद कुमार शर्मा, मुख्य परिसर प्रभारी डॉ. गीता सराफ तथा उप परिसर प्रभारी डॉ. प्रवीण शर्मा उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने गुरु के महत्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों से भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप आचरण करने का आह्वान किया।
कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा भक्ति संगीत, गुरु वंदना एवं श्लोक प्रस्तुति भी दी गई। समारोह का समापन 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः के सामूहिक उच्चारण से हुआ।

कान्वेन्ट स्कूल प्रबंधन को लगी फटकार

सदस्य बाल संरक्षण आयोग ने विद्यालयों का किया निरीक्षण

विजय मत, शहडोल।

सदस्य, मध्य प्रदेश बाल संरक्षण आयोग श्रीमती मेघा पवार ने संभागीय मुख्यालय शहडोल के गुड शेफर्ड कॉन्वेंट स्कूल में विभिन्न कक्षाओं एवं लाइब्रेरी का अवलोकन किया तथा छात्र-छात्राओं को मिलने वाली सुविधाओं को जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि विद्यालय द्वारा स्पेशल फीस के रूप में अभिभावकों से राशि ली जा रही थी जिसका विवरण अभिभावकों को नहीं दिया जा रहा था, इस पर सदस्य बाल संरक्षण आयोग द्वारा स्कूल प्रबंधन को फटकार लगाई गई। निरीक्षण के दौरान यह भी पाया गया कि अनुसूचित जाति जनजाति वर्ग के बच्चों का पंजीयन छात्रवृत्ति हेतु पोर्टल पर नहीं किया गया। जिससे इन बच्चों को छात्रवृत्ति की राशि प्राप्त नहीं हो रही है। इस पर भी सदस्य द्वारा नाराजगी व्यक्त की गई तथा एक सप्ताह में कार्य में सुधार लाने के निर्देश दिए गए।
सदस्य बाल संरक्षण आयोग श्रीमती मेघा

पवार ने ज्ञानोदय हायर सेकेंडरी आवासीय विद्यालय विचारपुर का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान बच्चों की कक्षाओं व छात्रावास का अवलोकन किया। उन्होने भोजन व्यवस्था की भी जानकारी ली तथा छात्र.छात्राओ से संवाद भी किया। उन्होंने विद्यार्थियों को हमेशा कड़ी मेहनत और लगन के साथ पढ़ाई करने की समझाईस दी। उन्होंने विद्यार्थियो को अनुशासन में रहने, सोशल मीडिया का उपयोग शैक्षणिक कार्यो के लिए करने, विद्यालय प्रबंधन के नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया।निरीक्षण के दौरान परियोजना अधिकारी आनंद अग्रवाल, प्राचार्य संजय पांडे, डीसी मिश्रा तथा पर्यवेक्षक श्रीमती वंदना पनिका सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

धरती आबा के तहत ग्राम पंचायत तेंदुहा में आयोजित किया गया शिविर

शहडोल। धरती आबा जागरुकता एवं लाभ संतृप्ति कैम्प जिले अर्न्तगत चिन्हित ग्रामों में तिथिवार निरंतर जारी है। धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत शहडोल जिले के ब्यौहारी विकासखंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत तेंदुहा में धरती आबा कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प में आधार अपडेशन कार्यए राशन कार्डए आयुष्मान कार्डए जाति प्रमाण पत्रए निवास प्रमाण पत्रए जनधन खाताए समग्र ई.केवाईसीए किसान सम्मान निधिए मातृ वंदना योजना आदि की जानकारी से लोगो को अवगत कराया गया।
धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत आयोजित शिविर में आए लोगो के आयुष्मान का?ए जाति प्रमाण पत्रए विधवा पेंषन सहित अन्य योजनाओ से संबंधित आवेदन लिए गए व यथा संभव निराकरण किया गया।

पुलिस महानिरीक्षक द्वारा थाना सिंहपुर एवं थाना खैरहा का निरीक्षण

विजय मत, शहडोल।

पुलिस महानिरीक्षक शहडोल जोन, शहडोल अनुराग शर्मा द्वारा थाना सिंहपुर एवं थाना खैरहा का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उनके द्वारा थाना परिसर में हवालात, मालखाना, रिकॉर्ड रूम, सीसीटीवी कैमरे, विभिन्न संधारित रजिस्टर, एवं बलवा ड्रिल सामग्री की गहनता से जांच की गई। उन्होंने जरायम रजिस्टर एवं व्हीसीएनवी रजिस्टर का विशेष रूप से अवलोकन कर उनमें पाई गई कमियों के शीघ्र सुधार हेतु निर्देशित किया। थाना प्रभारी एवं बीट प्रभारियों को गुंडा-बदमाशों की सतत निगरानी एवं नियमित चेकिंग करने के निर्देश दिए गए। ड्यूटी पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से चर्चा कर, उन्होंने थाना प्रभारियों को बेहतर पुलिसिंग, नागरिकों के लिए पुलिस की सुलभता और जनहित में प्रभावी कार्य सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए।इस निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक शहडोल रामजी श्रीवास्तव, संबंधित थानों के थाना प्रभारी एवं स्टाफउपस्थित रहे।

अवैध शराब जप्त

शहडोल। जिले में अवैध शराब की बिक्री पर रोक लगाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार अभियान चलाया गया। इस अभियान के तहत जिले के सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में अवैध शराब के विक्रेताओं के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करें।

बुढार पुलिस ने की जुआ एक्ट के तहत कार्यवाही

विजयमत,शहडोल।

पुलिस अधीक्षक शहडोल द्वारा नशे एवं सट्टा/जुआ के विरूद्ध कार्यवाही करने हेतु सभी थाना/चौकी प्रभारियों को निर्देशित किया गया है। जिसके तारतम्य में लगातार कार्यवाही किया जा रहा है। थाना बुढार क्षेत्रांतर्गत दिनांक 08.07.25 को कस्बा भ्रमण के दौरान मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम छाता बरहाई में कुछ व्यक्ति तास के पत्तों से हारजीत का दाव लगाकर जुआ खेल रहे है। सूचना पर बुढार पुलिस द्वारा उक्त सूचना स्थान पर दबिश देकर आरोपियों 01. आशीष कुमार शर्मा उम्र 27 साल निवासी बरतरा, 02 मोह. तनवीर उम्र 37 साल निवासी नरसरहा डिपो, 03 राकेश पटेल उम्र 32 साल निवासी कंचनपुर, 04 सुदीप जायसवाल उम्र 32 साल निवासी जमुई एवं 05 रोशन लोधी पिता विष्णु प्रसाद लोधी उम्र 31 साल निवासी जमुई के कब्जे से तास के 52 पत्ते एवं 3,250 रूपये नगदी एवं 14 नग मोटर सायकिल जब्त किया गया। पुलिस द्वारा सभी आरोपियों के विरूद्ध जुआ एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया।

भाजपा ने गुरूपूर्णिमा पर किया शिक्षकों का सम्मान

विजयमत,शहडोल।

श्री गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर भाजपा जिलाअध्यक्ष,सांसद, विधायक व अन्य जनप्रतिनिधियों ने साधु संतों गुरुओं का किया सम्मान गुरुवार को श्री गुरु पूर्णिमा के अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा जी के नेतृत्व में शहडोल जिले के प्रत्येक मंडलों में श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर साधु संतों एवं धर्म गुरुओं शिक्षकों एवं विभिन्न क्षेत्र के गुरुओं का श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव के अवसर पर शाल श्रीफल भेंट कर तिलक लगाकर सम्मान किया गया भाजपा जिला मीडिया प्रभारी विनय केवट ने जानकारी देते हुए गुरुवार को बताया है कि भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष व विधायक माननीय हेमंत खंडेलवाल जी के

निर्देशानुसार श्री गुरु पूर्णिमा के अवसर पर साधु संतों गुरुओं का सम्मान कार्यक्रम किया जाना था श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव के शुभ अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा, सांसद श्रीमती हिमाद्री सिंह, विधायक श्रीमती मनीषा सिंह एवं भाजपा कार्यकर्ता गण व अन्य जनप्रतिनिधियों ने शहडोल जिले व नगर के मोहन राम जानकी मंदिर, कल्याणपुर स्थित हनुमान मंदिर, पांडव नगर स्थित गर्ल्स कॉलेज, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर एवं सिंचाई विभाग कॉलोनी स्थित संगीत टीचर मुनेंद्र मिश्रा जी के विद्यालय में गुरुजनों का सम्मान तिलक लगाकर एवं शाल श्रीफल भेंट कर सम्मान कर आशीर्वाद प्राप्त किया।इस अवसर पर प्रमुख रूप से भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा, सांसद श्रीमती हिमाद्री सिंह, विधायक श्रीमती मनीषा सिंह, संतोष लोहानी, शीतल पोद्दार, पिंकू शुक्ला, भूपेंद्र मिश्रा, राकेश सोनी, विनय केवट अमित मिश्रा, प्रियम त्रिपाठी ,निभा गुप्ता नीलम चतुर्वेदी,अमित गुप्ता बंटी ,सौरभ गोले, रवींद्र वर्मा,रक्कू कनौजिया,नागेंद्र गोले, अनुराग शुक्ला, आयुष पांडे, रिंकू बर्मन,अंकुर शर्मा सहित भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ ज्येष्ठ श्रेष्ठ कार्यकर्ता गण श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

लापरवाही

हाउसिंग बोर्ड की लापरवाही, भूमि पर अतिक्रमण का खतरा बढ़ा

होम्योपैथी औषधालय भवन निर्माण अधर में, मरीजों को हो रही परेशानी

विजयमत,शहडोल।

शहडोल नगर के बाईपास रोड स्थित कोटमा तिराहा के समीप प्रस्तावित होम्योपैथी औषधालय भवन का निर्माण अब तक प्रारंभ नहीं हो पाया है। शासन द्वारा लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व भवन निर्माण के लिए 48 लाख रुपए की राशि स्वीकृत कर हाउसिंग बोर्ड को उपलब्ध करा दी गई थी। बावजूद इसके निर्माण कार्य ठंडे बस्ते में पड़ा है। हाउसिंग बोर्ड द्वारा अब तक टेंडर प्रक्रिया भी पूरी नहीं की गई है, जिससे स्थानीय नागरिकों और मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा से वंचित रहना पड़ रहा है।

अतिक्रमण का बढ़ता संकट

जिस भूमि पर औषधालय भवन का निर्माण प्रस्तावित है, वहां अब अतिक्रमणकारियों ने धीरे-धीरे कब्जा जमाना शुरू कर दिया है।

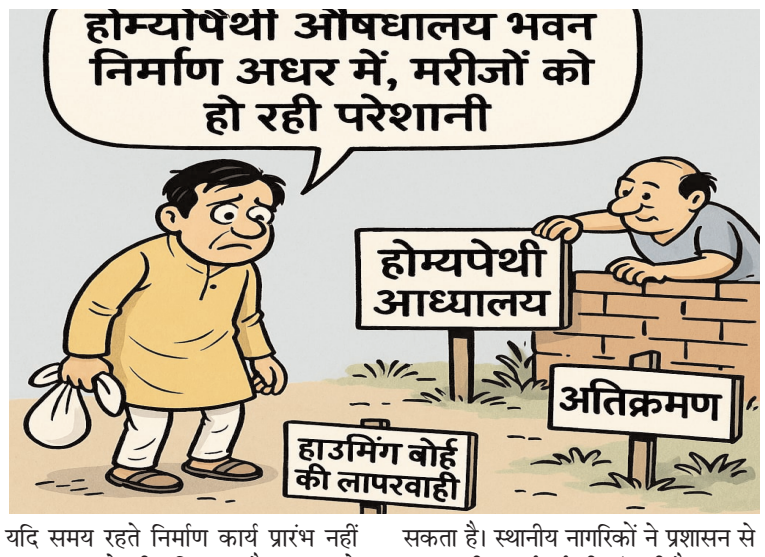

यदि समय रहते निर्माण कार्य प्रारंभ नहीं कराया गया तो पूरी भूमि पर अवैध कब्जा हो सकता है। स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन से इस पर शीघ्र कार्रवाई की मांग की है।

एक कमरे में संचालित हो रही डिस्पेंसरी

फिलहाल नगर की होम्योपैथी डिस्पेंसरी दक्षिण वनमंडल के सामने स्थित स्वास्थ्य विभाग के एक भवन में संचालित हो रही है। यहां पहले से ही प्राथमिक आरोग्य केन्द्र भी संचालित हो रहा है। ऐसे में एक ही भवन में दो स्वास्थ्य इकाइयों के संचालन से भारी अव्यवस्था की स्थिति बनी हुई है। होम्योपैथी डिस्पेंसरी को केवल एक कमरे में सीमित कर दिया गया है, जिससे मरीजों को ना तो समुचित इलाज मिल पा रहा है और ना ही आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हो पा रही हैं।

48 लाख की स्वीकृत राशि भी पड़ी है बेकार

होम्योपैथी औषधालय के लिए शासन द्वारा स्वीकृत 48 लाख रुपए की राशि हाउसिंग बोर्ड को हस्तांतरित की जा चुकी है। इसका उद्देश्य आयुष अस्पताल के समीप एक नवीन भवन का निर्माण कर वहां से औषधालय संचालन शुरू करना था। लेकिन टेंडर प्रक्रिया पूरी नहीं होने से यह योजना अधर में लटकी हुई है।

स्थानीय लोगों में नाराजगी

भवन निर्माण में हो रही देरी और अतिक्रमण की स्थिति को लेकर स्थानीय नागरिकों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। उनका कहना है कि शासन स्तर से राशि जारी होने के बाद भी कार्य में लापरवाही समझ से परे है। यदि जल्द ही निर्माण कार्य प्रारंभ नहीं हुआ तो भविष्य में इसका क्रियान्वयन और कठिन हो जाएगा।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सीता शुक्ला द्वारा पीजी इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विस प्रा.लि., प्लॉट नं. 18, इंडस्ट्रियल एरिया, रिछाई, जबलपुर म.प्र. से मुद्रित एवं विजय मत भवन, गायत्री मंदिर रोड, वार्ड नं. 13, शहडोल, म.प्र. से प्रकाशित। संपादक- सीता शुक्ला, प्रधान संपादक- विजय शुक्ला
(*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार)। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र शहडोल होगा। आर.एन.आई.-पंजीयन नंबर MPHIN/2018/76119, e-mail: vijaymat.sdl@gmail.com

शहरी विकास के नए अध्याय की शुरुआत

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

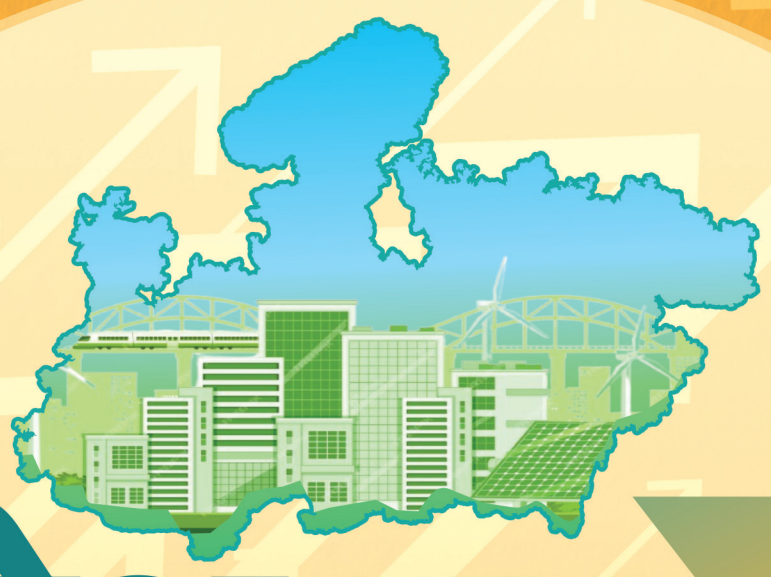

मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव
भविष्य के शहरों का निर्माण

11 जुलाई, 2025 । पूर्वाह्न 10:00 बजे | ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर, इंदौर

शुभारंभ
मुख्यमंत्री
डॉ. मोहन यादव
द्वारा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुरूप मध्यप्रदेश के शहरों में इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित हो रहा है। इससे बढ़ती नगरीय जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। समृद्ध और विकसित शहर, प्रदेश के समावेशी विकास की आधारशिला बनेंगे।

\- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

प्रमुख आकर्षण
- 1500 से अधिक प्रतिभागी
- एक्सपो (आमजन के लिए सायं 5:30 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक)
- वन-टू-वन मीटिंग

फोकस सेक्टर
- रियल स्टेट
- इन्फ्रास्ट्रक्चर
- पर्यटन
- होटल इंडस्ट्री

पैनल चर्चा
- अर्बन टेक
- अर्बन ग्रीन्स
- अर्बन मोबिलिटी
- अर्बन इन्फ्रा ड्राइव

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2025

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhypradesh @jansamparkMP JansamparkMP

D-11062/25